Key to
Navjeevan Practice Book

Standard
5

Teacher's Copy

हिंदी सुलभभारती

NAVJEEVAN
PUBLICATIONS PVT. LTD.
MUMBAI ★ PUNE

अनुक्रमणिका

अ. क्र.	पाठ का नाम	पृष्ठ क्र.
●	**पहली इकाई**	
1.	आओ खेलें	3
2.	बूँदें	4
3.	योग्य चुनाव	5
4.	कश्मीरा	7
5.	पहचान हमारी – भाग (१)	7
6.	पेटूराम	8
7.	बधाई कार्ड	9
8.	करो और जानो	10
9.	नीम	11
10.	गड़ा धन	12
11.	मित्रता	14
12.	बचत	15
13.	पहचान हमारी – भाग (२)	17
14.	मैं सड़क हूँ	17
15.	व्यायाम	20
16.	बोलो और जानो	21
✦	स्वयं अध्ययन	21
✦	पुनरावर्तन – 1	21
✦	पुनरावर्तन – 2	21
●	**दूसरी इकाई**	
1.	गाँव और शहर	24
2.	जीवन	26
3.	भाई – भाई का प्रेम	28
4.	बालिका दिवस	31
5.	रोबोट	33
6.	जुड़ें हम	33
7.	(अ) बोध	34
	(आ) समान–विरुद्ध	35

अ. क्र.	पाठ का नाम	पृष्ठ क्र.
8.	बीज	35
9.	मुझे पहचानो	37
10.	मुझे जानो	38
11.	वीरों को प्रणाम	38
12.	सपूत	40
13.	राष्ट्रीय त्योहार	42
14.	(अ) हम अलग – रूप एक	44
14.	(ब) छुक–छुक गाड़ी	44
15.	ज्ञानी	45
16.	बचाव	46
17.	निरीक्षण	47
18.	चलो – चलें	48
19.	स्वयं अध्ययन	49
✦	पुनरावर्तन – 3	50
✦	पुनरावर्तन – 4	52

पहली इकाई

आओ खेलें

प्र.१. खेल का नाम सुनते ही मन में खुशी और उत्साह आता है। खेलना-कूदना सभी को अच्छा लगता है। मुझे भी खेलना अच्छा लगता है। मेरा प्रिय खेल है क्रिकेट। यह खेल मुझे खेलना और देखना भी अच्छा लगता है। मैं क्रिकेट मेरे दोस्तों के साथ खेलता हूँ। यह खेल खेलने के लिए बल्ला, गेंद, तीन डंडे़ जिसे विकेट कहते है यह सामग्री लगती है। इस खेल में दो संघ होते हैं। प्रत्येक संघ में ११-११ खिलाड़ी होते हैं। एक संघ के खिलाडी बल्लेबाजी करते हैं। दूसरे संघ के खिलाड़ी क्षेत्ररक्षण (फिल्डिंग) करते हैं। गली मुहल्लो में छुट्टी के दिन यह बड़े चाव से खेला जाता है। दुनियाभर के प्रसिद्ध खिलाड़ियों के नाम बच्चों की जुबान पर होते हैं। हर खिलाड़ी अपने देश के लिए खेलते हुए गर्व महसूस करता है। मुझे सचिन तेंडुलकर का खेल बहुत अच्छा लगता है। यह केवल मेरा ही नहीं सारी दुनिया का लोकप्रिय खेल है।

1. नंदनवन

प्र.१. (१) चित्र में उल्लेखित सूचनाएँ :
- **पौधे लगाओ।**
- **पेड़ बचाओ।**
- **नाचो-गाओ।**
- **कतार में चलो।**

(२) चित्र में आए अभिवादन पर शब्द :
- **नमस्ते।**
- **स्वागत है।**

(३) (i) (१) वृक्ष (२) पंक्ति

(ii) (१) अलग (२) पालतू

(४) पेड़ हमें जीवन वायु प्रदान करते हैं जिसके बिना हमारा जीवन असंभव है । इसके अलावा भी कई अन्य लाभ होते हैं। पर्यावरण को दूषित करने वाली हानिकारक गैसें अवशेषित कर वे प्रदूषण को कम करने में मदद करते हैं। हमें फल, फूल, जड़ीबूटियाँ और शुद्ध हवा देते हैं। पशु-पक्षियों को आश्रय देते हैं। बरसाती बादलों को आकर्षित करते है।

इनकी जड़े मिट्टी की क्षति रोकती हैं। इनकी लकड़ी भी हमें कई तरह से उपयोगी होती है।

प्र.२. (अ) (१) पानी (२) जिंदगी

(आ) (१) मृत्यु (२) जाओ

प्र.३. (१) नारियल (२) अशोक (३) गुलमोहर

(४) पीपल (५) नीम (६) बरगद

(७) आम (८) अमरुद (९) कटहल

(१०) बादाम

---

2. बूँदें

प्र.१. (१) बूँदों ने इनके मन को हर्षाया :
- **मेंढक**
- **मोर**
- **पपीहे**
- **कोयल**

(२) (i) पद्यांश में आए जल स्त्रोतों के नाम:

(अ) नाला **(आ) नदी** **(इ) सागर**

(ii) पुरवाई का रथ

(३) बूँदें जब धरती पर आती हैं तो छोटे-मोटे नालों में बहने लगती हैं। इन नालों से गुजरती हुई वे नदियों में पहुँच जाती हैं और नदी से सागर में जा मिलती हैं। ये बूँदें गरमी से परेशान लोगों को शीतलता पहुँचाती हैं। मेंढक, मोर, पपीहे, कोयल सबको खुशी देती हैं। मनुष्य, पशु-पक्षी सबको हरषाती हैं ये बूँदें। पुरवाई के रथ पर सवार होकर इठलाती और मुसकाती हुई आती है ये बूँदें।

प्र.२. **(१) कवि का नाम :** रोहिताश्व अस्थाना

(२) पसंद की पंक्तियाँ : रिमझिम-रिमझिम गातीं बूँदें, धरती पर हैं आतीं बूँदें। खेतों, बागों, मैदानों में, हरियाली फैलातीं बूँदे।

(३) पंक्तियाँ पसंद होने का कारण : ये पंक्तियाँ मुझे पसंद हैं क्योंकि इन पंक्तियों में प्रकृति के सुंदर परिवर्तन को कवि ने चित्रित किया है।

हरियाली मन–मस्तिष्क को सुकुन देती है। कवि ने लयात्मक शब्दों का उपयोग कर इसे और भी सुखद बना दिया है।

(४) **कविता द्वारा मिलने वाला संदेश :** इस कविता से कवि ने परोक्ष रूप से हमें परोपकार, त्याग, समर्पण जैसे मूल्यों को समझाया है। बूँदें हर तरफ हरियाली फैलाती है वैसे ही हमें भी अच्छे कार्य करते हुए खुशियाँ फैलानी चाहिए। बूँदें तपती गरमी से लोगों को राहत पहुँचाती है वैसे ही हमें भी मुसीबत में लोगों की मदद करके उन्हें सुख पहुँचाना चाहिए।

प्र.३. (अ) (१) रिमझिम–रिमझिम, (२) गाती बूँदे, आतीं बूँदें,
(३) हरियाली फैलातीं बूँदें, (४) मिल जातीं बूँदें
(५) पहुँचातीं बूँदें (६) मन हरषातीं,
(७) इठलातीं, मुसकातीं

(ब) (१) भूमि (२) मयूर
(३) उपवन (४) ठंडक

प्र.४. (अ) (१) धरती, (२) हरियाली, (३) सागर,
(४) लोगों,

(आ) (१) – (ग), (२) – (ड), (३) – (क),
(४) – (ख), (५) – (घ)

---

3. योग्य चुनाव

प्र.१. (१) –(ख), (२) – (घ), (३) – (क), (४) – (ग)

(१) जगतराम के गुण :
सेवाभावी | **परोपकारी** | **ईमानदार**

(२) जगतराम की इच्छा – **सेवामुक्त होने की**

(३)
प्रजा
रानी — **राजा** — राजा
नृप

(४) महात्मा गांधीजी के मार्ग का अनुसरण करनेवाले मेरे पिताजी के गुणों का मैं प्रशंसक हूँ। उनकी सत्यनिष्ठा और ईमानदारी का मैं कायल हूँ। वे समय का सम्मान करते हैं और समय का सदुपयोग करने की पूरी कोशिश करते हैं। उन्होंने हमेशा अपने माता–पिता का सम्मान किया। माता–पिता की सेवा कर्तव्य समझकर नहीं बल्कि आत्मसंतुष्ट के लिए की। पर्यावरण के प्रति उनका प्रेम भी प्रशंसनीय है। उन्होंने मुझे अपने जन्मदिन पर पौधा लगाने की अमूल्य सीख दी है जो केवल मेरे लिए ही नहीं बल्कि आनेवाली पीढ़ी के लिए भी उपयुक्त सिद्ध होनेवाली है। ऐसे मेरे अद्वितीय पिताजी को मेरा प्रणाम !

प्र.२. (१) (ब) कर्मवीर के कपड़े कीचड़ से सने थे।
(ड) बैलगाड़ी वाला वृद्ध स्वयं मंत्री जगतराम थे।
(क) राजा मंगलसेन बहुत प्रसन्न हुए।
(अ) जगतराम जी ने योग्य व्यक्ति का चुनाव किया है

(२) (i) (१) क्योंकि उसके कपड़े कीचड़ से सने थे।
(२) क्योंकि कर्मवीर में वे सारे गुण थे जो राज्य के मंत्री के लिए आवश्यक थे।
(ii) (१) सत्य (२) असत्य

(३) (i) (१) उदास (२) जवान
(ii) (१) पुल्लिंग (२) स्त्रीलिंग

(४) दूसरों के दुख दूर करने से हमें मन की शांती मिलती है। दुखी व्यक्ति की मदद करने पर, उसके दु:खों को दूर करने पर उस व्यक्ति के मुँह से हमारे लिए आशीर्वाद निकलते हैं जो हमें जीवन में संघर्षो का सामना

करने की शक्ति देते हैं। अत: यथाशक्ति दूसरों की पीड़ा को अपनी पीड़ा समझकर उस पीड़ा को दूर करने वाला कर्मवीर इसीलिए तो मंत्री की परीक्षा में उत्तीर्ण हुआ और नया मंत्री बना।

(आ) (१) हरकारे, (२) वृद्ध, (३) राजदरबार,
(४) प्रतिभाशाली, (५) आशीर्वाद,

4. कश्मीरा

प्र.१. (१) एक लड़की के हाथ में चूड़ी नहीं है।
(२) चित्र में चप्पू के आकार अलग-अलग है।
(३) चित्र में पंछियों की संख्या कम-ज्यादा है।
(४) चित्र में पेड़ों की संख्या कम-ज्यादा है।
(५) लड़की के कुर्ते में बॉर्डर का रंग अलग है।
(६) फूलों की टोकरी का रंग अलग है।
(७) मटके का रंग अलग है।
(८) एक चित्र में एक पहाड़ की चोटी पर बर्फ नहीं है।
(९) चित्र में फूल नीचे गिरा हुआ है।
(१०) दुपट्टा एक चित्र में लंबा है।

5. पहचान हमारी - भाग (१)

प्र.१. (अ) (१) जल, रज, चल (२) दम, कल, दल, कम
(३) काम, कान, मन (४) काश
(५) लय (६) रूह
(७) चमच (८) चमक, कम
(९) पर (१०) कुछ
(११) गम, मल (१२) टहल, कल, हल, लटक
(१३) मार, रट, टर (१४) लाख, उड़, नख
(१५) जग अगर, रज।

(आ) (१) आशा (२) शरद (३) शिकारी
(४) अशरफ (५) आकाश

(इ) ह - हिरन, क - किला, ख - खिलौना,

ज - जिंदगी, च - चिड़िया, र - रिश्ता,
छ - छिपकली, स - सिपाही, प - पिताजी,
ग - गिलहरी ।

(ई) मात्रा - आ : (१) काम, (२) राम, (३) शाकाहार
(४) हरा (५) कहानी
मात्रा - ई : (१) जीवन, (२) कीमत, (३) मीठा
(४) थपकी, (५) पीला
मात्रा - उ : (१) कछुआ, (२) खुशी (३) गुलाब,
(४) सुबह (५) मुख
मात्रा - ऊ : (१) जुगनू, (२) डमरू, (३) उल्लू,
(४) खूबसूरत, (५) अमरूद

(उ) (१) अनार (२) साइकिल (३) घड़ी (४) छिपकली
(५) लड़की (६) डमरू (७) ऊन (८) कछुआ

6. पेटूराम

प्र.१. (१)

(अ)		(ब)
(१) अंगूर	-	आधा किलो
(२) केला	-	आधा दर्जन
(३) मिठाई	-	सवा पाव
(४) मेवा	-	एक पाव

(२) परिच्छेद में आए फलों के नाम :

अंगूर | **केला** | **सेब**

(३) परिच्छेद में आया मिठाई का नाम : रबड़ी
(i) (१) केला (२) मिठाईयाँ
(ii) (१) ज्यादा (२) नि:संकोच

(४) उपवास का धार्मिक महत्त्व चाहे जो कुछ भी हो पर आयुर्वेद इसे उत्तम औषधि मानता है। इसकी वजह से शरीर के विषैले तत्त्वों को शरीर से बाहर निकाला जा सकता है। कई शारीरिक एवं मानसिक बीमारियों में यह फायदेमंद साबित होता है। शरीर की ऊर्जा को यह बढ़ाता है और पाचनतंत्र को ठीक करता है। इसीलिए हफ्ते में एकाध उपवास रखना चाहिए।

प्र.२. (अ) (१) अल्पविराम (२) पूर्णविराम (३) विस्मयादिबोधक
(४) योजक (५) प्रश्नवाचक (६) उद्धरण चिह्न

(आ) (१) यहाँ अंगूर मिलते हैं क्या ?
(२) मुझे बाजार से फल, फूल, सब्जियाँ और मसाले लाने हैं।
(३) शाबाश ! तूने कर दिखाया।
(४) हमारे घर मेहमानों का आना-जाना लगा रहता है।
(५) आप जरूर आइएगा; हमें आपका इंतजार रहेगा।
(६) मुंशीजी ने कहा, ''मेरा काम हो गया।''
(७) दिवाली के दिन घर-घर दीए जगमगा उठे।
(८) आशा, सीमा, पायल और मीना मेरी सहेलियाँ हैं।
(९) राजा ने कहा, ''तभी आपको सेवामुक्त किया जा सकता है।''
(१०) रंगीन काँच के छोटे-छोटे टुकड़े चिपका दीजिए।

7. बधाई कार्ड

प्र.१. पहले बधाई कार्ड बनाने के लिए आवश्यक सामग्री इकट्ठा कर लें; जैसे कि कागज, पुरानी वस्तुएँ, गोंद, स्केच पेन, कैंची आदि। सबसे पहले कार्ड के लिए आवश्यक आकार का कागज काट लें। कटे हुए कागज के किनारों पर चारों ओर पुरानी लेस चिपका दें। टिकलियाँ, काँच के छोटे-छोटे टुकड़ों को आकर्षक ढंग से चिपका दें। स्केच पेन से रंग भर दें और उसपर बधाई संदेश लिख दें। हो गया बधाई कार्ड तैयार।

प्र.२.

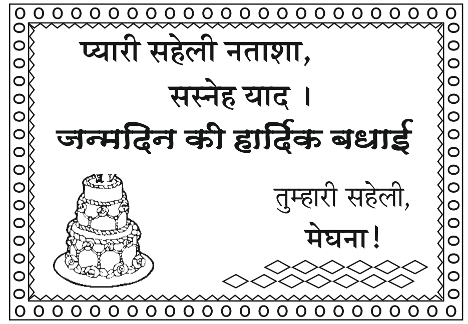

8. करो और जानो

प्र.१. (१)

चित्र में लड़कियों द्वारा की जा रही क्रियाएँ :
- फुगड़ी खेल रही हैं।
- कपडे धो रही है।
- हँस रही है।
- नाच रही है।

(२) (१) चित्र में वर्णित फूलों के नाम :
बेला कनेर गेंदा गुलाब गुड़हल

(२) चित्र में वर्णित फलों के नाम :
अनार केला सेब सीताफल अंगूर

(३) (i) (१) कुम्हार (२) पंसारी
(ii) (१) रुलाना (२) खोलना

(४) वैसे तो माँ मुझे कुछ काम करने नहीं देती और पढ़ाई पर ध्यान देने के लिए ही कहती रहती है। परंतु छुट्टी के दिन में अपनी अलमारी साफ करके उसे थोड़ी-बहुत मदद करता हूँ। मुझे रसोई में माँ की मदद करना अच्छा लगता है। इसलिए रात के भोजन के समय मैं माँ के साथ रसोईघर में रुककर उसकी मदद करता हूँ। कुछ डिब्बे ऊपर की अलमारी से निकालना या रखना हो या बरतन जमाकर रखना हो तो मैं मदद कर देता हूँ। मटर छिलने का भी मुझे बड़ा शौक है। माँ को पता है, इसलिए माँ मुझे बुला भी लेती है और मेरा पसंदीदा काम मुझे सौंप देती है।

प्र.२. (१) किसान (२) डाकिया (३) नर्स (४) सैनिक
(५) वकील (६) शिक्षक (७) डॉक्टर (८) दर्जी
(९) धोबी (१०) बढई (११) सुनार

9. नीम

प्र.१. (१)

पद्यांश में आए पेशों के नाम:
- डॉक्टर
- ओझा
- वैद्य -हकीम

(२) (i) (१) नीम की घनी पत्तियों के कारण।
(२) नीम की सूखी पत्तियों के जलाने से उठे धुएँ के कारण।
(ii) (१) गरमी और थकान मिट जाती है।
(२) अनाज में इल्लियाँ या कीड़े-कीट नहीं पड़ते। वह सुरक्षित रहता है।

(३) सरल अर्थ – नीम का वृक्ष अपना परिचय देते हुए कह रहा है, ''मैं डॉक्टर या ओझा नहीं हूँ, वैद्य या हकीम भी नहीं हूँ, मैं तो सिर्फ एक पेड़ हूँ और मेरा नाम नीम है। अर्थात एक डॉक्टर या वैद्य की तरह मैं मनुष्य के स्वास्थ्य का ख्याल रखता हूँ। मेरी सूखी पत्तियाँ ऊनी कपड़ों के साथ रखने से ऊनी कपड़े सुरक्षित रहते हैं। कोठार में अनाज के साथ सूखी पत्तियाँ रख देने से अनाज में इल्लियाँ या कीड़े-कीट नहीं पड़ते। मेरी सूखी पत्तियों को जलाने से जो धुआँ उठता है उससे मच्छर, मक्खियों जैसे किटाणु दूर भागते हैं।''

बैसाख-जेठ की गरमी में नीम का हरापन और गाढ़ा हो जाता है। इसलिए नीम कहता है, ''मेरी घनी पत्तियों के कारण मेरी छाया में शीतलता की रंगत है। जो कोई मेरी छाया में आकर बैठता है उसकी सारी थकान मिट जाती है और वह गरमी से राहत पाता है।

प्र.२. (अ) (१) ओझा, (२) अनाज, (३) पत्तियों
(४) थकान (५) शुद्ध (६) धरती
(७) सुख।

(आ) मैंने, कपड़े, हकीम, अनाज, थकान, सूरज, कहानी, किरणों।

10. गड़ा धन

प्र.१. (१) (१)-(ग), (२)-(घ), (३)-(क), (४)-(ख)।
(२) (i) (१) उसके चारों बेटे बड़े आलसी थे।
(२) पत्नी द्वारा सुझाया गया उपाय।
(ii) (१) भविष्य (२) बैठकर
(३) (i) (१) फिक्र (२) निशा
(ii) (१) पति (२) बेटियाँ
(४) 'श्रम ही जीवन है' यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा क्योंकि श्रम करने से ही हम जीवन में तरक्की कर सकते हैं। श्रम करने से हमारा मन प्रसन्न रहता है और शरीर तंदुरुस्त। श्रम करके ही हम मान-सम्मान प्राप्त कर सकते हैं, धन-वैभव पा सकते हैं। श्रम ही सफलता की कुंजी है। श्रम हमारे भाग्य के बंद ताले की चाबी है। मेहनत करनेवाला कभी असफल नहीं होता। इसीलिए हमें आलस्य को त्यागकर श्रम करने चाहिए।

प्र.२. (१) हरिनाथ काका की सलाह मानने का परिणाम:
↓ **खेत में नन्हे-नन्हे अंकुर निकल आए।**
↓ **चारों के मन में उत्साह जाग गया।**
↓ **वे निराई-गुड़ाई करने लगे।**
↓ **उनके खेत में बहुत अच्छी फसल हुई।**

(२) (i) खेत की खुदाई
- कारण → **गड़े हुए धन को पाने के लिए**
- अवधि → **दो-तीन राते**

(ii) (१) सत्य (२) असत्य

(३) (i) (१) दिन (२) शत्रु

(ii) (१) दो – तीन (२) नन्हे – नन्हे

(४) मन के खिलाफ होनेवाली घटनाएँ इनसान को उदास कर देती हैं। उस समय मित्र या सहेली को उसकी उदासी दूर करने में आगे बढ़कर मदद करनी चाहिए। ऐसा कुछ करना चाहिए जो उसके शरीर और मन में उत्साह भर दें। मैं अपने मित्र या सहेली को खुले में घूमाने ले जाऊँगा जहाँ की शीतलता, प्राकृतिक सुंदरता उसके मन को तरोताजा कर देगी। अगर उसे संगीत पसंद हो तो ऐसे कोई कार्यक्रम में ले चलूँगा। उसके साथ उसका मनपसंद खेल खेलूँगा ताकि उसके मन में सकारात्मक ऊर्जा पैदा हो जाए और वह उदासी के आवरण से बाहर निकलकर सामान्य हो जाए।

प्र.३. (अ) (१) परिश्रमी, (२) अल्हड़पन, (३) तीर्थयात्रा

(आ) (१) रामदीन परेशान था क्योंकि उसके चारों बेटे बड़े आलसी थे और इधर–उधर बैठकर गप्पे मारा करते थे।

(२) तीर्थयात्रा पर निकलते समय रामदीन ने बेटों से कहा कि उन्होंने खेत में धन गाड़कर रखा है और जरुरत पड़ने पर उसे निकालकर वे उपयोग कर सकते हैं।

(३) खेत में जब नन्हे–नन्हे अंकुर निकल आए तब चारों भाइयों के मन में उत्साह जागा।

(४) चारों भाइयों को पिता जी की 'जरुरत पड़ने पर खेत में गड़ा धन निकाल लेना' यह बात याद आई।

11. मित्रता

प्र.१. (१)

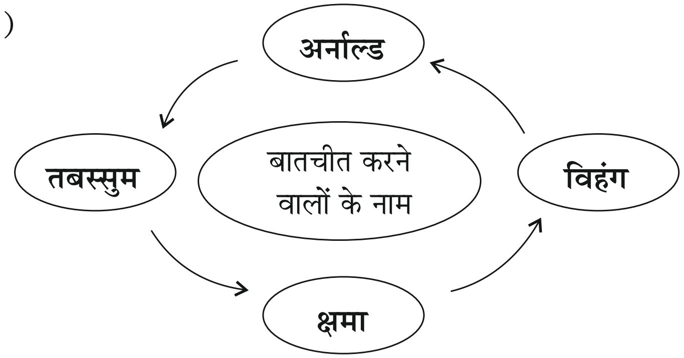

(२) (i) परिच्छेद में आए पेशों के नाम :

वकील **नर्स** **सरपंच**

(ii) परिच्छेद में आए रिश्तों के नाम :

दादा जी **माता जी** **पिता जी** **बहन** **बुआ**

(३) (i) (१) पास (२) चिकित्सालय

(ii) (१) देवालय (२) पुस्तकालय

(४) मेरा जन्मदिन हर वर्ष धूमधाम से मनाया जाता है। मेरे रिश्तेदार और मित्र–परिवार को निमंत्रित किया जाता है। इस वर्ष भी सभी मेरे जन्मदिन पर आए थे। मुझे तोहफों के साथ–साथ ढेर सारा आशीर्वाद और शुभकामनाएँ मिलीं। पिताजी ने मुझे साइकिल दी और माँ ने घड़ी। ये दोनों चीजे मुझे गति और समय का सदुपयोग सिखलाएँगी। इस वर्ष शनिवार को जन्मदिन आया था। इसलिए रात्रि भोजन के साथ–साथ मनोरंजन के कार्यक्रम, छोटी–मोटी प्रतियोगिताएँ भी आयोजित की थी जिनका सभी ने भरपूर मजा उठाया। बुआ जी ने गाए मधुर गीत ने इस दावत को सभी के लिए यादगार बना दिया।

प्र.२. (अ) (१)–(ख), (२)–(क), (३)–(घ), (४)–(ग)।

(आ) (१) छतरी, (२) बस स्टैंड, (३) ज्ञान-विज्ञान,
(४) किस्से।

(इ) **राजू :** नमस्ते ! मेरा नाम राजू है।
रमा : नमस्ते, दोस्त, मैं रमा हूँ।
राजू : मैं पाँचवीं कक्षा में पढ़ता हूँ।
रमा : मैं भी पाँचवीं कक्षा की छात्रा हूँ।
राजू : मुझे कहानियों की किताबें पढ़ना अच्छा लगता है।
रमा : फिर तो हमारी खूब जमेगी। मुझे भी कहानियाँ पढ़ने में रुचि है।
राजू : क्या हम अपनी किताबें एक-दूसरे को दे सकते हैं?
रमा : नेकी और पूछ-पूछ? जरूर दे सकते हैं।

(ई) (१) महात्मा गांधी जी वक्त के पाबंद थे।
(२) पाठक सर हमें हिंदी पढ़ाते हैं।
(३) तुम बड़े होशियार हो।
(४) रोहन फुटबॉल खेलता हैं।
(५) मेरी चाची जी पाठशाला में पढ़ाती हैं।
(६) क्या, तू मेरी पढ़ाई में मदद करेगा?

12. बचत

प्र.१. (१)

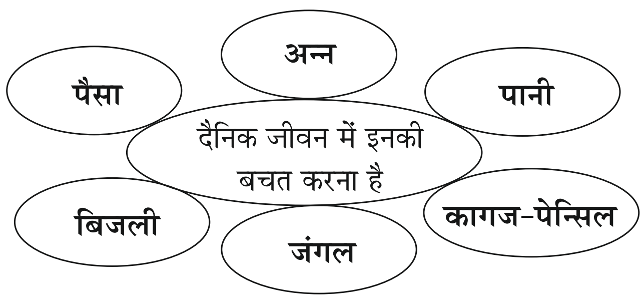

(२) (i) बचत का महत्त्व समझ में आते ही जीवन की हर जरूरत पूरी होगी और जीवन खुशहाल, सुंदर बनेगा।
(ii) (क) पीना, नहाना, खेती, साफसफाई आदि।
(ख) उजाला, विविध उपकरण चलाना आदि।
(ग) लकड़ी, औषधि, पशु-पक्षियों की रक्षा।

(३) (i) (१) जल (२) कानन
(ii) (१) पेन्सिलें (२) बिजलियाँ

(४) अन्नपानी के बगैर जिंदगी की कल्पना ही नहीं की जा सकती। इनका महत्त्व समझ में आने पर उसकी बर्बादी न करने की कोशिश की जा सकती है। अत: बच्चों में जागरूकता लाना आवश्यक है। थाली में जूठन छोड़कर अन्न की बरबादी नहीं करनी चाहिए। भोजन बचा हो तो उसे अन्य भूखे, गरीब लोगों में बाँटकर सड़ने से बचाया जा सकता है। ठीक वैसे ही पानी भी बेवजह न बहाकर हम बर्बाद होने से बचा सकते हैं। वर्षाजल को संचित कर उसका उपयोग करना, पानी का पुन: प्रयोग करना आदि उपाय भी कारगर सिद्ध होंगे।

---

13. पहचान हमारी - भाग (२)

प्र.१. पाठ में ए, ऐ, ओ, औ, ऋ, अं, अ:, अँ और ऑ स्वर आए हैं।

प्र.२. ए – एकता, एड़ी, एकाग्र, एवं, एकाक्ष।
ऐ – ऐरावत, ऐनक, ऐतिहासिक, ऐश्वर्य, ऐसा।

प्र.३. ए – मेज, बेखबर, लेखक, देर, केला।
ऐ – बैल, चैत्र, जैसा, मैला, फैलाना।

प्र.४. कोयल, झरोखा, सरौता, दौड़ा, बोलना।

प्र.५. (१) वृक्ष (२) संस्कृत (३) गृह (४) तृप्त (५) पृथ्वी।

प्र.६. अं – बंदर, गंगा, रंग, संगीत, कंगन, हंस।

अः – प्रातः, प्रायः, अतः, पुनः।

अँ – हँसना, पाँच, ऊँट, चाँद, पूँछ।

ऑ – डॉक्टर, हॉल, कॉफी, बॉल, ऑटो।

प्र.७. बंधन, पंढरपुर, अंजीर, कंधा, शतरंज, अनंत, पंख, निरंजन, आनंद, गोविंद।

प्र.८. (१)-(ड), (२)-(घ), (३)-(क), (४)-(ग), (५)-(ख), (६)-(छ), (७)-(च)

14. मैं सड़क हूँ

प्र.१. (१) सडक पर चलनेवाले वाहनों के नाम : **साइकिल**, **रिक्शा**, **बस**

(२) (i) (१) सड़क (२) पुलिस का सिपाही

(ii) (१) सड़क इन सबके काम आती है : **बालक**, **जवान**, **बूढ़े**

(२) सड़क ऐसी बनी हुई है : **टेढ़ी**, **नीची**, **ऊँची**

(३) (i) (१) पुल (२) युवा

(ii) (१) चौराहा (२) साइकिलें

(४) एक सफल और खुशहाल जिंदगी के लिए 'अनुशासन' में रहना बहुत जरूरी है। अनुशासन से जीवन में शांती और सकून आता है और प्रगति के रास्ते पर हम अग्रेसर हो पाते हैं। घर हो, पाठशाला हो या खेल का मैदान हमें बनाए गए नियमों का कठोरता से पालन करना चाहिए। अनुशासन के कारण हम अपनी भावनाओं को नियंत्रित करना सीखते हैं, सही समय पर सही कार्य करना सीखते हैं। हमारा जीवन संतुलित बनता है। हम जिम्मेदार बनते हैं। दूसरों का विश्वास प्राप्त कर पाते हैं। जीवन के हर पड़ाव पर दुविधा की स्थिति से बचकर निकलने में सक्षम बनते हैं। समय के पाबंद बनते हैं।

प्र.२. (१)

सीमेंट से बनी सडक का दुख

↓

लोग उसे गंदा करते हैं।

↓

जगह-जगह उसे खोदकर गड्ढे बना देते हैं।

↓

पान खाकर जहाँ जी में आया थूकते हैं।

↓

गड्ढों के कारण दुर्घटनाएँ होती हैं।

(२) सड़क की इच्छा : **साफ-सूथरा रहना**, **लोगों को रास्ता दिखाना**, **गाँव-गाँव जोड़ना**, **देश में खुशहाली लाना**

(३) (१) सोचे-समझे (२) जगह-जगह

(३) मेल-जोल (४) दूर-दूर

(४) अच्छे स्वास्थ्य के लिए सभी प्रकार की स्वच्छता आवश्यक है। हमें स्वच्छता से कभी समझौता नहीं करना चाहिए। स्वच्छता के प्रति लोगों में जागरूकता लाना बेहद जरूरी है। हमें पेड़ों को नहीं काटना चाहिए

और पर्यावरण को स्वच्छ बनाए रखना चाहिए। हमें साफ-सफाई की आदत डाल लेनी चाहिए ताकि हमारा शारीरिक एवं बौद्धिक स्वास्थ्य अच्छा रहे। गंदगी कीटाणुओं को पैदा करती है और कीटाणु से बीमारियाँ पनपती है। अतः सफाई नियमित रूप से होनी चाहिए। यह बात लोगों को समझानी चाहिए। जन-जागृति से आस-पास का माहोल साफ-सुथरा रखने में मदद मिलेगी।

प्र.३. (अ) (१) सेतु, (२) तकनीक, (३) दुर्घटनाएँ, (४) साफ-सुथरी, (५) इच्छा।

(आ) (१) मनुष्य के पैरों से मिट्टी दब जाने से पगडंडी बनती है। खेतों में किसान पगडंडी बनाकर अपने खेत को सड़क से जोड़ता है। पहाड़ों में, नदी किनारे, जंगलों में पगडंडियाँ देखने को मिलती है।

(२) हमारा देश देहातों में बसता है। देहातों में जहाँ बस्ती बहुत कम है आज भी कच्ची सड़कें देखने को मिलती हैं। ये मिट्टी से बनी होती है और उबड़-खाबड़ होती है। गाड़ियों-बसों को इनपर चलने में दिक्कत होती हैं।

(३) कच्ची सड़क पर रेती, कंकड़ बिछाकर ऊपर से कोलतार डाला जाता है और पक्की सड़कें बनाई जाती है। इनपर वाहन तेज गति से दौड़ते हैं। आजकल नई तकनीक से सीमेंट से पक्की सड़कें बनाई जा रही हैं जो जल्दी खराब नहीं होती और रखरखाव का खर्च कम होता है। सरकार की कोशिश होती है कि हर कच्ची सड़क को पक्की सड़क में तबदील करें।

(इ) (१) गणवेश (२) डामर, तारकोल
(३) सडक, मार्ग (४) गृह, भवन

(ई) (१) गुण (२) साफ
(३) अविकसित (४) पक्का

(उ) (१) बालिका (२) बूढ़ी

प्र.४. मैं आपके गाँव की नदी बोल रही हूँ। कभी मेरे आस-पास हरियाली होती थी। मैं अपना शीतल मीठा जल देकर मनुष्य, पेड़-पौधे, पशु-पक्षी सभी की प्यास बुझाती थी। पहाड़ों से लड़कर, चट्टानों को काटकर, घने जंगलों से गुजरती हुई मैं यहाँ पहुँची तो बहुत खुश थी और लोक-कल्याण के काम में लग गई थी। तब मुझे नहीं पता था कि मैं जिसकी सेवा में लगी हूँ वह मुझे कहीं का नहीं रहने देगा।

हे स्वार्थी मनुष्य, तूने मेरी सारी तपस्या मिट्टी में मिला दी है। आज तू अपनी सफलता के नगाड़े बजा रहा है, नए-नए कल-कारखाने खोल रहा है। इन कारखानों का गंदा पानी मुझमें बहा रहा है। मेरा पानी जहरीला बन गया है। मैं अब किसी के काम नहीं आ सकती। कभी तेरे पूर्वज मुझे माता कहकर मेरी पूजा करते थे। कभी मैं जीवनदायिनी हुआ करती थी। मनुष्य तू अगर अपनी आदतें नहीं बदलेगा और कचरा मुझमें फेंकता रहेगा तो मुझे उग्र रूप धारण करना पड़ेगा और तब मैं खुद अपने बस में नहीं रहूँगी। कह देतीं हूँ कि अब भी वक्त है, सुधार ले अपनी आदतें !

15. व्यायाम

प्र.१. (१) पद्मासन (२) वज्रासन (३) धनुरासन
(४) भुजंगासन (५) हलासन (६) पवनमुक्तासन
(७) शवासन (८) पर्वतासन (९) सर्वांगासन
(१०) मकरासन

16. बोलो और जानो

प्र.१. मातृभाषाः

(१) अमरूद (२) गुब्बारा (३) घर (४) बस्ता
(५) बेला (६) पानी (७) गुड़िया (८) हवाईजहाज

प्र.२. (१) यह मोर है। (२) वह शेरनी है। (३) वह चाँद है।
(४) यह पाठशाला है। (५) वह मैदान है। (६) यह नदी है।

(७) यह कलम है। (८) वह सूरज है। (९) यह महामार्ग है। (१०) यह गेंद है। (११) वह खिलाड़ी है।

प्र.३. (१) भाषा, (२) फूल, (३) पुस्तक, (४) हवा, (५) नदी, (६) पर्वत, (७) विद्यार्थी, (८) शिक्षक, (९) मुख्यमंत्री, (१०) अध्यक्ष।

स्वयं अध्ययन

प्र.१.

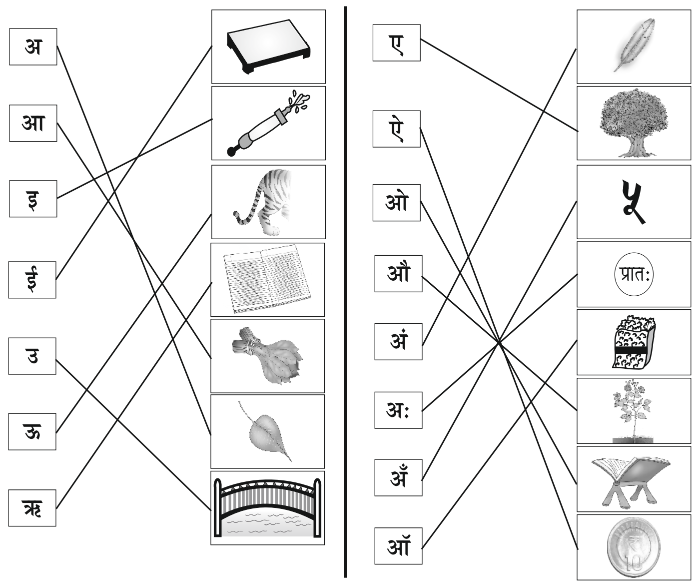

पुनरावर्तन - १

प्र.१. विद्यार्थी स्वयं कृती करे।

प्र.२. (१) जाला, (२) तालाब, (३) दड़बा, (४) छत्ता, (५) गोठ, (६) घर, (७) घोंसला, (८) गुफा

पुनरावर्तन - २

प्र.१. परीक्षा का विद्यार्थी जीवन में बड़ा ही महत्त्व होता है। सभी छात्र परीक्षा के दिनों में कड़ी मेहनत करते हैं। हर कोई अच्छे अंक पाने की कोशिश में लगा होता है। मैं भी उनसे अलग नहीं हूँ। पूरी लगन से मैंने जो पढ़ा, याद किया;

उसे निर्धारित समय में पेपर में उतारने की कोशिश करता हूँ। अब ऐसे में अगर पेन खराब हो जाएगा तो पूरी मेहनत पर पानी फिर जाएगा।

अगर मेरे साथ ऐसा हुआ तो पहले अपने आप को सँभालकर शांत मन से सोचूँगा। समस्या का हल ढूँढ़ने की कोशिश करूँगा। अपने सुपरवाइजर को अपनी परेशानी बताऊँगा। उनके पास मदद की गुहार लगाऊँगा। हो सकता है कि वे मेरी मदद कर दें। मुझे कोई दूसरा पेन लिखने मिल जाए और अगर पेन दिलाना संभव न हो पाया तो अपने खराब पेन से लिखने में ज्यादा समय लगेगा इसलिए अधिक समय की माँग करूँगा। किसी तरह समस्या का समाधान तो ढूँढ़ना ही होगा।

अगर ऊपर लिखे दोनों उपाय संभव न हो पाए तो उन प्रश्नों को पहले हल करूँगा जिनके अंक अधिक मिलते हैं। जैसे कि वस्तुनिष्ठ प्रश्न, व्याकरण के प्रश्न पहले हल करके पेपर अधिक से अधिक पूरा करने की कोशिश करूँगा।

प्र.२. विद्यार्थी स्वयं कृती करें।

प्र.३.

	हिंदी	मराठी		हिंदी	मराठी
(१)	पीपल	पिंपळ	(२)	आम	आंबा
(३)	पपीता	पपई	(४)	नीम	लिंब
(५)	केला	केळी	(६)	कमल	कमळ
(७)	नारियल	नारळ	(८)	बेल	बेल
(९)	इमली	चिंच			

प्र.४. कुछ शब्द यहाँ उदाहरण के तौर पर दिए जा रहे हैं। विद्यार्थी कोई भी समाचार पत्र या दिनदर्शिका को लेकर शब्द लिखें। दैनिक भास्कर, जागरण, नवभारत टाइम्स जैसे समाचार पत्र और कालनिर्णय, महालक्ष्मी (कलैंडर) दिनदर्शिका का उपयोग छात्र कर सकतें हैं।

(१)	खास	आ की मात्रा	(२)	कमियाँ	इ की मात्रा
(३)	सभी	ई की मात्रा	(४)	चुटकुला	उ की मात्रा
(५)	रूप	ऊ की मात्रा	(६)	नेता	ए की मात्रा
(७)	तैयारी	ऐ की मात्रा	(८)	लोग	ओ की मात्रा
(९)	बौछार	औ की मात्रा	(१०)	सुंदर	अं की मात्रा

दिनदर्शिका के शब्द

(१)	वार	आ की मात्रा	(२)	रविवार	इ की मात्रा
(३)	महावीर	ई की मात्रा	(४)	बुधवार	उ की मात्रा
(५)	लक्ष्मी पूजन	ऊ की मात्रा	(६)	तृतिया	ऋ की मात्रा
(७)	देव प्रबोधिनी	ए की मात्रा	(८)	चैत्र	ऐ की मात्रा
(९)	सोमवार	ओ की मात्रा	(१०)	पौर्णिमा	औ की मात्रा

प्र.५. प्रस्तुत चित्र में पाठशाला दिखाई दे रही है। पाठशाला की इमारत के बाहर की जगह में छात्रोंको खेलने के लिए इंतजाम किया हुआ दिखाई दे रहा है। वहाँ झूले दिखाई दे रहे हैं। झूले पर झूलने का मजा बच्चे ले रहे हैं। वहाँ फिसलपट्‌टी है। वहाँ पर भी बच्चे खेलते नजर आ रहे हैं। पाठशाला के बच्चे तरह-तरह के खेल खेल रहे हैं। कुछ बच्चे लगोरी खेलते हुए दिखाई दे रहे हैं। पाठशाला के बाहर की जगह में दो - तीन पेड़ भी नजर आ रहे हैं। सब बच्चे खेलों का आनंद उठाते हुए दिखाई दे रहै हैं।

☆☆☆

दूसरी इकाई

1. गाँव और शहर

प्र.१. (१) चित्रों में आए घोष वाक्य।

↓

गाँव-शहर की प्रगति, देश की उन्नति।

↓

स्वच्छ ग्राम, स्वस्थ ग्राम।

↓

स्वच्छ नगर, सुंदर नगर।

↓

शुद्ध हवा - पानी का तंत्र, स्वस्थ जीवन का मंत्र।

(२)(१) गाँव की विशेषताएँ :

स्वच्छ | **स्वस्थ**

(२) शहर की विशेषताएँ :

स्वच्छ | **सुंदर**

(३) (i) (१) अवनति (२) विषमता

(ii) (१) साफ (२) गाँव

(४) स्वच्छता मानव का एक आवश्यक गुण, एक अच्छी आदत है। हमारे आसपास की अस्वच्छता के कारण हमें अनेक बिमारियों का सामना करना पड़ता है। स्वस्थ मन और स्वस्थ शरीर के लिए स्वच्छता बहुत ही महत्त्वपूर्ण होती है। अगर हम अपने घर और आसपास की जगह साफ रखेंगे तो हमारा शरीर और मन दोनों प्रसन्न रहेंगे। स्वच्छता हमें सकारात्मक विचार की ओर प्रवृत्त करती है। हमारी भारतीय संस्कृती में भी यह माना गया है कि जहाँ पर सफाई होती है वहाँ पर लक्ष्मी रहती है। व्यक्तिगत स्वच्छता के साथ आसपास की सफाई भी हमारी

जिम्मेदारी है। हम घर का कचरा बाहर डालते है और बाहर गंदगी फैलाते है ऐसा ना कर हमें कचरा कूड़ेदान में ही डालना चाहिए। स्वच्छता उत्तम स्वास्थ्य का मूल है। इसलिए हमें अपने आप को स्वस्थ रखने और स्वस्थ जीवन बिताने के लिए स्वच्छता के मूल्य को समझकर अच्छी आदतें जीवन में डालने का प्रयत्न करना चाहिए।

प्र.२. (१) (१) अस्वस्थ (२) अशुद्ध (३) अवनति
(४) अस्वच्छ (५) कुरूप (६) विदेश
(२) (१) पाठशाला (२) जल
(३) राष्ट्र (४) प्रगति

प्र.३. (१) अस्पताल (२) यातायात
(३) सिग्नल (४) जेब्रा क्रॉसिंग (५) इमारत

प्र.४. (१) विकास की अंधी दौड़ में मनुष्य अपने पर्यावरण को भूल गया है। अनुशासन भूल गया है। अनुशासन का पालन न करने से न केवल दुर्घटनाएँ होंगी बल्कि देश का विकास भी ठीक से नहीं होगा। अनुशासन में कई बातें आती है जैसे कि यातायात के नियमों का पालन करना, टैक्स समय पर भरना, बिजली-पानी का उपयोग करते समय उनकी बचत का ख्याल रखना आदि। अगर हर नागरिक अनुशासन का पालन करेगा तो देश के विकास में चार चाँद लग जाएँगे।

(२) शहर के हर नागरिक की जिम्मेदारी बनती है कि वह अपने शहर को स्वच्छ रखें। कचरा केवल कूड़ेदान में ही फेकें। नगर में पेड़, पौधे उगाएँ, उनकी देखभाल करें क्योंकि ये पेड़-पौधे और उन पर खिले रंग-बिरंगे फूल नगर को सुंदर बनाते हैं। शोर कम करें, अनुशासन का पालन करें तभी हमारा शहर स्वच्छ और सुंदर बन सकता है।

2. जीवन

प्र.१. (१)

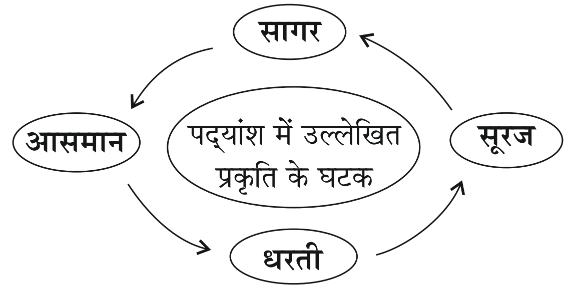

(२) (i) (१) चलता है। (२) मेहनत करता है।

(ii) घड़ी → **सदा टिक-टिक करती है।**
घड़ी → **रुकने का नाम नहीं लेती।**

(३) सागर जैसे जोश से लहराता, उछलता है वैसे ही हमें भी जीवन में पूरे जोश और उत्साह के साथ आगे बढ़ना है। हमारा हृदय आसमान की तरह विशाल होना चाहिए जो दूसरों को माफ कर सकें। हमें धरती की तरह सहनशील बनना चाहिए ताकि काम बोझ न लगें। मिलजुलकर काम करना चाहिए और आगे बढ़ना चाहिए क्योंकि जो इस तरह सहनशील, दिलदार होकर चलेगा वह सफल होगा। नाम और शोहरत पाने के लिए मेहनत के, कर्म के मार्ग पर ही चलना चाहिए और ईमानदारी से पद, नाम प्राप्त करना चाहिए।

प्र.२. (१) डॉ. कुलभूषणलाल मखीजा।

(२) लहराना सागर से सीखो, आसमान-सा हृदय विशाल।
सहनशील बन धरती जैसे।

(३) प्रकृति के घटक हमें कुछ न कुछ सीखाते है। सागर से हमें लहराना सीखना चाहिए। आसमान की तरह हमें अपना हृदय विशाल रखना चाहिए। धरती से हमें सहनशीलता सीखनी चाहिए। इसलिए मुझे यह पंक्तियाँ पसंद है।

(४) 'जीवन' कविता द्वारा कवि निरंतर कार्यरत रहने का संदेश दे रहे हैं। कवि कहते हैं कि हमें कभी भी आराम नहीं करना चाहिए, बल्कि निरंतर आगे बढ़ते रहना चाहिए। मेहनत और ईमानदारी से नाम और पद प्राप्त करना चाहिए।

प्र.३. (अ) (१) विश्राम, (२) सूरज-सा, (३) अपनत्व,
(४) सागर, (५) धरती, (६) बोली,
(७) सुविचार

(आ) नाम - विश्राम, बढ़ना - उठना, काम - नाम,
चलता - बढ़ता, विचार - सुविचार।

व्याकरण

प्र.४. (१) (१) मृत्यु (२) छोटा (३) धरती
(४) परायापन (५) पीछे (६) नीचे
(७) कड़वी (८) झूठा

(२) (१) पारावार (२) परिश्रम (३) दिल (४) आराम

(३) (१) बोलियाँ (२) सेवाएँ

(४) (१) पिता (२) भाई

3. भाई - भाई का प्रेम

प्र.१. (१)

दो भाइयों की खासियत:
- **मेहनती**
- **एक-दूसरे के प्रति प्रेम**
- **एक दूसरे की भलाई सोचना**
- **एक-दूसरे के लिए त्याग**

(२) (i) (१) छोटे भाई के बाल-बच्चे नहीं है।
(२) मनोहरपूर के अधिकांश लोग खेती करते थे।

(ii) (१) छोटे भाई को सारा काम अकेले ही सँभालना पड़ता है।
(२) पूरे गाँव में फसल अच्छी हुई थी और कटाई हो चुकी थी।

(३) (i) (१) बहन (२) बच्चियाँ
(ii) (१) कृषक (२) सहायता

(४) जिदंगी में हर रिश्ते की अपनी अलग पहचान होती है। हर रिश्ता अपने आप में खास होता है। ये रिश्ते हमेशा के लिए बनाए रखना हो

तो समझदारी होना बहुत आवश्यक है। समझदारी के गुण से किसी छोटी गलती या गलतफहमी की वजह से रिश्ते टूट नहीं सकते। एक दूसरे के गिले-शिकवे ध्यान में नहीं रखे जाते। रिश्तों की समझदारी ही आपस में प्यार और मिठास बनाएँ रखती है। एक-दूसरे की बातें अच्छी तरह समझ लें, कडवी बातें भूल जाएँ तो कोई भी रिश्ता खत्म नहीं होगा। वह और मजबूत बन सकता है। रिश्तों में अपनापन बरकरार रखकर रिश्ते निभाएँ जाते हैं। रिश्तों में समझदारी होगी तो बहुत से परिवार टूटेंगे नहीं। कोई भी रिश्ता हो दोस्ती का, खून का, पड़ोसियों का सभी रिश्ते समझदारी से ही अटूट रहते हैं।

प्र.२. (१)

बड़े भाई का दृष्टिकोण	छोटे भाई का दृष्टिकोण
(१) छोटा भाई अकेला है।	(१) बड़े भाई बाल-बच्चे वाले है।
(२) छोटे भाई को सारा काम अकेले सँभालना पड़ता है।	(२) जितना चाहे उतना काम कर सकता हूँ।
(३) मेरे बच्चे मेरी कुछ-न-कुछ मदद करते हैं।	(३) बड़े भाई के घर गृहस्थी के खर्च अधिक है।
(४) छोटे भाई के पास अनाज अधिक होगा तो अधिक दिन तक घर चलेगा।	(४) बड़े भाई को अधिक मात्रा में अनाज चाहिए।

(२) (i) (१) धीरे-धीरे (२) गठरियाँ

(ii) (१) घर गृहस्थी के खर्चे अधिक हैं और अधिक मात्रा में अनाज चाहिए।
(२) दोनों भाई एक-दूसरे के अनाज के ढेर की ओर बढ़ रहे थे और अचानक एक-दूसरे से टकरा गए।

(३) (i) (१) उजाला (२) जमा
(ii) (१) बाल-बच्चेवाले (२) एक-दूसरे

(४) एक -दूसरे की मदद करना हमारा कर्तव्य है यह बात सच है। हम दूसरों की मदद करते है तो हमारे दिल को खुशी मिलती है। दूसरों

की मदद करना अपने–आप में एक अच्छा गुण है। हम किसी की मदद करेंगे तो दूसरा व्यक्ति भी हमारी मदद करने जरूर आएगा। दूसरों को भी मदद करने के लिए हमें प्रेरित करना चाहिए। दूसरों को मदद करने से रिश्ते बनते हैं। मन में भाईचारे की भावना निर्माण होती है। हमें जब भी किसी की मदद करने का मौका मिलता है उस वक्त हमें मुँह नहीं फेरना चाहिए। किसी की हम मदद करेंगे तो ही हम अच्छे इन्सान बनेंगे वरना जीवन में हमेशा पछताते रहेगें क्योंकि 'जैसा आप करोगे वैसा ही पाओगे,' इसलिए दूसरों की ज्यादा से ज्यादा मदद करनी चाहिए।

प्र.३. (१) उपजाऊ (२) प्रेम (३) फसल
(४) गठरियाँ

व्याकरण

प्र.४. (अ) (१) स + प्रेम, (२) प्रति + दिन, (३) वि + ज्ञान,
(४) अ + दृश्य, (५) कु + संग, (६) खुश + बू,
(७) निः + मल, (८) अप + यश, (९) अ + ज्ञान,

(आ) (१) अनुकरण, (२) अभिमान, (३) दुरुपयोग,
(४) प्रयत्न, (५) निडर, (६) सुविचार,
(७) पराधीन, (८) विदेश, (९) लापरवाह

प्र.५. (१) उपज + आऊ, (२) भला + आई
(३) गृहस्थ + ई, (४) कारण + वश,
(५) आवश्यक + ता, (६) बाल–बच्चे + वाले,
(७) ईमान + दार, (८) अल्हड़ + पन,
(९) आरंभ + इक।

प्र.६.

शब्द		मूल शब्द	प्रत्यय	नया शब्द
(१)	सप्रेम	प्रेम	भरा	प्रेमभरा
(२)	प्रतिदिन	दिन	इक	दैनिक
(३)	विज्ञान	ज्ञान	ई	ज्ञानी
(४)	अदृश्य	दृश्य	मान	दृश्यमान
(५)	परोपकार	उपकार	ई	उपकारी
(६)	बेईमान	ईमान	दार	ईमानदार
(७)	सुविचार	विचार	इक	वैचारिक
(८)	सजग	जग	ता	सजगता
(९)	सुसज्ज	सज्ज	इत	सज्जित
(१०)	अनुपस्थित	स्थित	इ	स्थिति

4. बालिका दिवस

प्र.१. (अ)

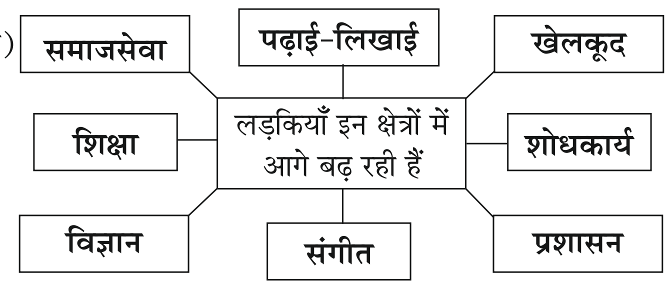

(आ) (i) (१) सावित्रीबाई फुले (२) तीन जनवरी
(ii) (१) शिक्षा हमें स्वावलंबी और सजग बनाती है।
(२) सृष्टि बहुत बन–ठनकर पाठशाला में आई।

(इ) (i) (१) लड़की (२) शिक्षिकाएँ
(ii) (१) वर्षगाँठ (२) विद्यालय

(ई) शिक्षा सभी के लिए जीवन में आगे बढ़ने और सफलता प्राप्त करने के लिए बहुत आवश्यक है। शिक्षा हमें स्वावलंबी बनाती है। शिक्षा से हमें तरह–तरह का ज्ञान प्राप्त होता है।

शिक्षा हम में आत्मविश्वास जगाती है यह आत्मविश्वास जीवन के कठिन समय में संकटों का सामना करने के लिए हमें मदद करता है। आजकल हर क्षेत्र में कामयाबी पाने के लिए शिक्षा आवश्यक है। शिक्षा प्राप्त करने से हमें अच्छी नौकरियाँ मिलती है। समाज में सम्मान मिलता है। शिक्षा हमारा जीवन सुखी और समृद्ध बनाती है। अच्छा नागरिक होने के लिए शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए क्योंकि शिक्षा ही हमें एक दूसरे का आदर करना सिखाती है । क्या सही क्या गलत यह समझ हम में शिक्षा प्राप्त करने से ही आती है। उज्ज्वल भविष्य के लिए शिक्षा एक बहुत आवश्यक साधन है।

प्र.२. (अ) (१) पत्नी (२) बालक (३) लड़के
(४) भाई/बहनोई (५) शिक्षक (६) पिता

(आ) (१) पढ़ाई – लिखाई (२) बन–ठनकर
(३) हाँ – हाँ

(इ) (१) नियमित (२) पीड़ित (३) मोहित
(४) व्यथित (५) सुगंधित

प्र.३. (i) एक लड़की शिक्षित होने से पूरा परिवार शिक्षित होता है। इसीलिए लड़कियों की शिक्षा महत्त्वपूर्ण है। आजकल सभी लड़कियाँ पाठशाला जाती हैं। इसीका परिणाम है कि वे न केवल पढ़ाई–लिखाई में बल्कि विज्ञान, संगीत, प्रशासन, खेलकूद आदि हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं।

(ii) पड़ोसी हमारे जीवन में बहुत महत्त्व रखते हैं। जब कभी मुसीबत आती है तो मदद करने दौड़कर आएगा हमारा पड़ोसी। धर्म, जाति–पाति सारे बंधन पड़ोसी धर्म के आगे शिथिल पड़ जाते हैं। कई बार इसके सबूत हमें मिलते हैं। हिंदू–मुस्लिमों के बीच जब कभी संघर्ष हुआ तो हिंदुओं की बस्ती में रहनेवाले मुस्लिम की रक्षा हिंदू पड़ोसियों ने की है और मुस्लिम बस्ती में रहनेवाले हिंदू की रक्षा मुस्लिम पड़ोसियों ने की है।

अच्छे पड़ोसी मिलना हमारा सौभाग्य है, लेकिन अगर वह अच्छा नहीं है तो हमारी जिदंगी में पर्व उत्सव का मजा ही चला जाता है। पड़ोसियों के साथ पर्व–उत्सव मनाने से आनंद दुगुना हो जाता है। मिल–जुलकर रहने से जीवन की रंगत बढ़ती है। एक पड़ोसी दूसरे पड़ोसी पर विश्वास करता

है तब एक–दूसरे की जिम्मेदारियाँ भी हँसते–खेलते उठाता है और जीवन की हर मुश्किल आसान कर देता है। सहयोग की भावना जन्म लेती है और एक स्वस्थ समाज की नीव रखी जाती है।

5. रोबोट

स्वाध्याय

प्र.१. विद्यार्थी स्वयं कृती करें।

6. जुड़ें हम

प्र.१. (अ) (१) लक्ष्य (२) ध्यान (३) प्रह्लाद
(४) विद्या (५) कुम्हडा (६) इंद्रधनुष
(७) महाराष्ट्र (८) अक्खड़ (९) रफ़्तार
(१०) सूर्य

(आ) (१)
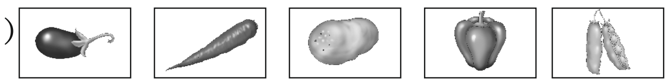
बैंगन गाजर आलू शिमला मिर्च मटर

(२)
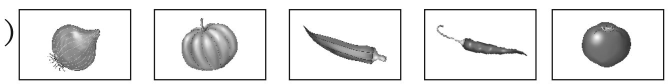
प्याज कद्दू भिंडी मिर्च टमाटर

(३)
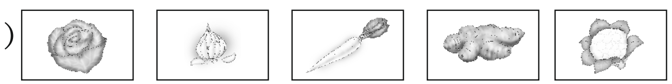
पत्तागोभी लहसून मूली अदरक फूलगोभी

(इ) (१) सेवा डॉक्टर का कर्तव्य है।
(२) इंद्रधनुष के रंगों की तरह मिलकर रहिए।
(३) पौधे लगाओ, प्रदूषण हटाओ।
(४) रक्तदान–जीवनदान, नेत्रदान–श्रेष्ठदान।

(ई) इंद्रधनुष के सात रंगों के नाम इस प्रकार है (१) लाल (२) नारंगी (३) पीला (४) हरा (५) आसमानी (६) नीला (७) जामूनी

(उ) (१) – (ई), (२) – (ए), (३) – (अ), (४) – (ऊ), (५) – (इ), (६) – (आ), (७) – (उ)

---

7. (अ) बोध

प्र.१. (अ) (१) एकवचन (२) बहुवचन (३) बहुवचन
(४) एकवचन (५) एकवचन (६) एकवचन
(७) बहुवचन (८) एकवचन (९) बहुवचन

(आ) (१) आँखें (२) गाएँ (३) चूहे
(४) सिक्का (५) वस्तु (६) नदी
(७) आम (८) पपीते (९) सब्जियाँ

प्र.२. (अ) (१) स्त्रीलिंग, (२) पुल्लिंग, (३) स्त्रीलिंग,
(४) स्त्रीलिंग, (५) पुल्लिंग, (६) पुल्लिंग,
(७) स्त्रीलिंग, (८) पुल्लिंग, (९) स्त्रीलिंग।

(आ) (१) नाग (२) रानी (३) चूहा
(४) बुढ़िया (५) बहन (६) देवर
(७) हिरनी (८) गाय, (९) बिलाव

प्र.३. (अ) (१) बैल पानी पीता है। (२) बिलाव दूध पी रहा है।
(३) बहन पत्र लिखती है। (४) देवरानी घर आ गई।
(५) नागिन फुफकारती है।

(आ) (१) भाई ने गठरियाँ बाँधीं। (२) हम पुस्तकें पढ़ते हैं।
(३) लड़के कहानियाँ सुनते हैं। (४) कई मकान गिर गए।
(५) लड़कियों ने आवाजें लगाईं।

(आ) समान – विरुद्ध

प्र.१. (अ) (१) नेत्र, नयन, लोचन, चक्षु। (२) पेड़, तरु, विटप,
(३) पंछी, विहंग, खग, (४) पुष्प, सुमन, कुसुम,
(५) दरवाजा, पट, (६) सवेरा, प्रभात, प्रातः
(७) केश, (८) खटिया।

(आ) (१) रात, (२) नीचे, (३) छोटा, (४) दुखी,
(५) पीछे, (६) खुला, (७) अधिक, (८) गर्म।

(इ) (क) – (ण), (ख) – (ढ), (ग) – (ट),
(घ) – (ठ), (ङ) – (ड)।

---

8. बीज

प्र.१. (i) (१) बकरी (२) चिड़िया

(ii) (१) क्योंकि बीज ने उसे खाने से रोका।
(२) क्योंकि कोंपल ने उसे खाने से रोका।

(२) (i) पानी ← बीज को अंकुर फूटने की वजह → धूप

(ii) (१) असत्य (२) सत्य

(३) (i) (१) सरिता (२) शाखा, टहनी
(ii) (१) बकरियाँ (२) कोंपल

(४) पेड़-पौधों की सुरक्षा करना प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है। घर के आसपास लगाए हुए पौधों को नियमित रूप से और उचित मात्रा में पानी, धूप, खाद देना आवश्यक है। जहाँ पेड़-पौधे लगाएँगे वह जगह हमेशा साफ-सुथरी रखनी चाहिए। सप्ताह में एक दिन पौधे के आसपास की मिट्टी को खोदकर उसमें पानी डालें जिससे पेड़ की जड़ो में हवा और पानी अच्छे से पहुँच जाएँ। हम ज्यादा दिनों के लिए कही बाहर जा रहे है तो पौधों को पानी डालने के लिए किसी को बताना चाहिए, नहीं तो वे मुरझा जाएँगे। पेड़-पौधों को काँटना नहीं चाहिए, अगर कोई उसे तोड़ रहा है तो उसे मना करना चाहिए

और उसकी गलती का अहसास दिलाना चाहिए। हम जैसे अपने बच्चों का प्यार से ख्याल रखते है उसी तरह हमें पेड़-पौधों का ध्यान रखना चाहिए।

प्र.२. (१)

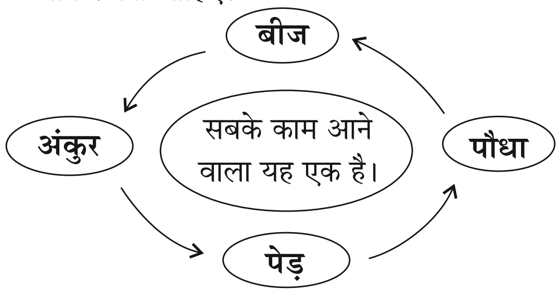

(२) (१) परिच्छेद में आए पशुओं कें नाम :

गाय | **बकरी**

(२) पौधे की इच्छा थी :

डाल-पात होने देने की | **पानी खाद खाने की**

(३) (i) (१) पौधे (२) गाएँ

(ii) (१) डाल-पात (२) एक-दूसरे

(४) वृक्ष हमें प्राणवायु देते हैं। वृक्ष से हमें फल, फूल मिलते हैं। कुछ वृक्षों का उपयोग हमें औषधियाँ बनाने के लिए और उसकी लकड़ी का उपयोग विविध वस्तुएँ बनाने के लिए होता है, जैसे कि मेज, कुर्सी, अलमारी। बारिश होने में वृक्ष का बड़ा योगदान रहता है। थके हुए मुसाफिर को वृक्ष की छाँव राहत देती है। इंधन के लिए भी वृक्ष काम आते हैं। प्रदूषण दूर करने में वृक्षों की बहुत मदद होती है। वह पशुपंछियों का आश्रयस्थान है। उसकी जड़े मिट्टी की क्षति रोकती है। प्राकृतिक अपदाओ को रोकने में पेड़ की मदद मिलती है। वृक्ष के कारण हरियाली और हरियाली के साथ जीवन में खुशहाली आती है। वैश्विक ताप को बढ़ने से रोकने के लिए हमें अधिक-से-अधिक वृक्ष लगाने होंगे।

प्र.३. (ख) किसी नदी किनारे एक बीज पड़ा था।

(क) पानी और धूप पाकर बीज में अंकुर फूटा।

(घ) उसकी डालें बड़ी-बड़ी हो गईं।

(ग) अब मैं तुम सबके काम आ सकता हूँ।

प्र.४. (१) बीज, (२) जमीन, (३) पौधा

प्र.५. (i) (१) रात (२) आसमान (३) छाव (४) नाखुश

(ii) (१) बैल (२) बकरा

(iii) (१) जल (२) पत्ता

(iv) **अर्थ :** खाने की इच्छा होना।

वाक्य : मिठाई देखकर रमेश के मुँह में पानी भर आया।

---

9. मुझे पहचानो

स्वाध्याय

प्र.१. (अ) (१) - (ई), (२) (ऊ), (३) - (अ),

(४) - (उ), (५) - (आ), (६) - (इ)

(आ) (१) चुड़ियाँ, साइकिल का चक्का।

(२) श्यामपट्ट, खो-खो खेल का मैदान, लिफाफा।

(३) कैरम बोर्ड, घड़ी।

(४) कंपास-बॉक्स, बक्सा,।

(५) आकाश कंदील, बनिए के दुकान के तराजु के नाप।

(६) पेन्सिल, पानी का नल या पाइप आदि।

(७) सैंडविच, विक्स की गोली,।

(८) जोकर की टोपी, आइस्क्रीम कोण।

10. मुझे जानो

प्र.१.

(क्रमांक)	देवनागरी लिपि (हिंदी)	रोमन लिपि (अंग्रेजी)
(१)	जहाज	Jahaj
(२)	प्याला	Pyala
(३)	रिक्शा	Riksha
(४)	बैल	Bail
(५)	ट्रक	Truck
(६)	कलम/लेखनी	Kalam
(७)	बस	Bus
(८)	रेडियो	Radio
(९)	ब्रश	Brush
(१०)	ट्रैक्टर	Tractor

---

11. वीरों को प्रणाम

प्र.१. (१) (१) पद्यांश में आए नदियों के नाम → (अ) गंगा, (आ) जमना

(२) पद्यांश में आए अभिवादन के शब्द → (अ) प्रणाम, (आ) नमस्कार

(२) (१) वीरों की विशेषताएँ → (अ) देशप्रेमी, (आ) देश के लिए मर-मिटने को तैयार

(२) वीरों के बलिदान का परिणाम → हिंद वतन का तारा चमका।

(३) भारत देश के लिए पद्यांश में आया शब्द: हिंद वतन

(३) जिन वीरों को देश की मिट्टी के कण-कण से प्यार हैं उन वीरों को कवि सैकड़ों बार प्रणाम करते हैं। इस देश की धरती पर गंगा-जमुना जैसी पवित्र नदियाँ बहती हैं। यहाँ देशवासियों के मन में अपने देश पर मर-मिटने की धुन सवार रहती है। देश की आजादी की खातिर कई वीरो ने अपना सर्वस्व बलिदान किया है। इन पराक्रमी वीरों के कारण दुनिया में हिंद देश तारे की तरह चमक उठा है। जिन वीरों ने इस तरह देश का, अपने वतन का नाम रोशन किया है उनको सौ बार प्रणाम, नमस्कार।

प्र.२. (१) रमेश दीक्षित।

(२) सीखा हम लोगों ने कुछ तो, प्राणार्पण की सीख में।

(३) देश की आजादी के लिए वीरों ने दिया हुआ बलिदान हमें प्राणार्पण की सीख देता है। हमें भी देश के लिए कुछ करने की प्रेरणा देता है।

(४) यह कविता हमारे मन में देशभक्ति, देशप्रेम की भावना निर्माण करती है। आजादी के खातिर वीरों ने अपना सर्वस्व बलिदान किया है, उन वीरों को प्रणाम करना, उनका सम्मान करना चाहिए। यह संदेश कवि ने इस कविता के द्वारा दिया है।

प्र.३. (अ) (१) मिट्टी (२) धरती (३) हरदम
(४) वतन (५) आजादी (६) प्राणार्पण

(आ) (४) देश की मिट्टी का कण-कण है, (२) जिन्हें प्राण से प्यारा।।
(३) सीखा हम लोगों ने कुछ तो (१) प्राणार्पण की सीख में।।

प्र.४.

	पर्यायवाची शब्द	विलोम शब्द
(१)	स्वतंत्रता	गुलामी
(२)	पराक्रमी	कायर
(३)	राष्ट्र	विदेश
(४)	प्यारा	अप्रिय
(५)	जमीन	आसमान

प्र.५. (१) प्यारा हमारा (२) बहती रहती (३) भीख सीख

प्र.६. आजादी की लड़ाई में जिन वीरों ने हिस्सा लिया उन्हें स्वतंत्रता सेनानी कहते हैं। नीचे कुछ स्वतंत्रता सेनानियों के नाम दिए हैं।

(१) (वीर सावरकर) विनायक दामोदर सावरकर, (२) (लोकमान्य तिलक) बाल गंगाधर तिलक, (३) लाला लजपतराय (४) सुभाष चंद्र बोस (५) सरदार वल्लभभाई पटेल (६) मोहनदास करमचंद गांधी (महात्मा गांधी) (७) चंद्रशेखर आजाद (८) पंडित जवाहरलाल नेहरू (६) गोपाल कृष्ण गोखले (१०) राजगुरु (११) राम मनोहर लोहिया (१२) भगतसिंह (१३) मदनलाल ढींगरा (१४) सुखदेव (१५) बटुकेश्वर दत्त ।

प्र. ७ (अ) (१) कण–कण (२) सौ–सौ (३) गंगा–जमना

(आ)

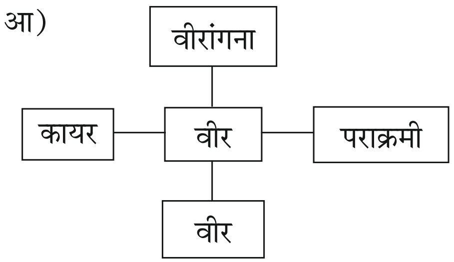

(इ) **अर्थ** – आँखों में आँसू आना

वाक्य – रजनी की दर्दभरी कहानी सुनकर हम सब की आँखें भर आई।

---

12. सपूत

प्र.१. (१)

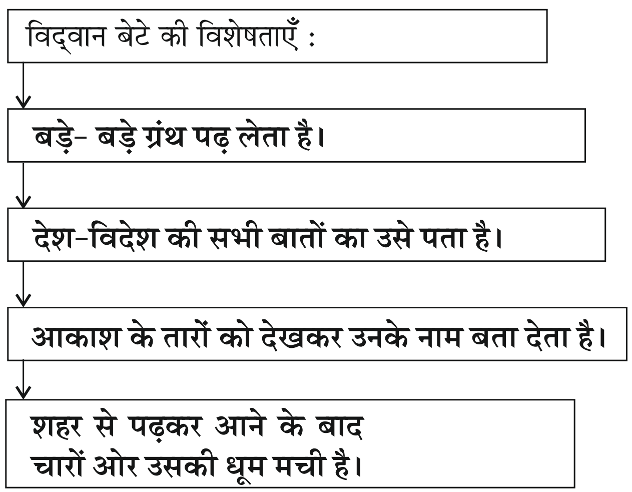

(२) (i) (१) तीन (२) पाँच सौ

(ii) (१) गलत (२) सही

(३) (i) (१) भाई (२) सुकन्या

(ii) (१) पनघट (२) अखाडा

(४) हर माँ अपने बेटे से हमेशा बहुत प्यार करती है। पुत्र–प्रेम में अंधा होकर माँ अपने जीवन के हर पल का त्याग करने को तैयार रहती है। अपने सुख–दुख उसे पुत्र के आगे बहुत तुच्छ लगते हैं। पुत्र–प्रेम की खातिर एक माँ कभी कठिन पर्वत से कूद जाती है तो कभी अपना कलेजा निकालकर पुत्र के हाथ में दे देती है। अपने नालायक बेटे को ठोकर लगने पर भी वह ‘बेटा लगी तो नहीं’ पूछती है। यह अंधा प्रेम ही तो है। उसे अपने बेटे के दोष नजर नहीं आते। खुद रुखा–सूखा खाकर वह अपने बेटे को अच्छे से अच्छा भोजन खिलाने की कोशिश करती है। पुत्र के लिए अंगारों पर चलना भी उसके लिए मामूली बात होती है।

प्र.२. (१) (आ) व्याख्यान देने जा रहा हूँ।

(ई) वह मतवाले हाथी की तरह झूम रहा था।

(अ) मुझे जोरों की भूख लगी है।

(इ) माँ से घड़ा लेकर वह उत्साह के साथ घर की ओर चल पड़ा।

(२) (i) (१) पहलवान (२) सीधा–सादा

(ii) (१) व्याख्यान (२) दंगल

(३) (i) (१) सीधा–सादा (२) दो–चार

(ii) सुपुत्र , कुपुत्र

(४) मैं मेरी माँ को घर में झाड़ू लगाने में मदद करती हूँ। छोटे कपड़े सूखाने में और सूखे कपड़ो की घड़ियाँ करने में मदद करती हूँ। माँ जब खाना बनाना शुरू करती हैं तो मैं सब्जियाँ साफ करने में उनका हाथ बँटाती हूँ जैसे मटर और लहसुन छिलना। माँ ने कोई चीज माँगी तो मैं उसे देती हूँ। खाने के समय खाने की जगह बर्तन, पानी लेकर रखती हूँ। माँ को मदद करने से मुझे बहुत खुशी मिलती हैं।

प्र.३. (१) (१) पुरुष (२) हाथिनी (३) विदुषी

(२) (१) कुआँ (२) संख्याएँ (३) घड़े

(३) (१) प्रतियोगिता (२) कृषक (३) स्वच्छ

(४) (१) मलिनता (२) कपूत (३) असाधारण

(५)

शब्द	उपसर्ग	प्रत्यय	मूल शब्द
(१) सुसज्जित	सु	इत	सज्ज
(२) स्वच्छता	–	ता	स्वच्छ
(३) नियमित	–	इत	नियम
(४) आवश्यक	–	अक	अवश्य
(५) विदेश	वि	–	देश

(६) **अर्थ** : बुरी तरह से हारना।

वाक्य : भारतीय जवानों के सामने दुश्मन **चारों खाने चित हो** गए।

13. राष्ट्रीय त्योहार

प्र.१. (१)

राष्ट्रीय त्योहार इस तरह मनाते हैं।

↓

राष्ट्रध्वज फहराते हैं।

↓

राष्ट्रगीत गाते हैं।

↓

प्रभात फेरियाँ निकालते हैं।

↓

जगह-जगह सजावट और रोशनी की जाती हैं।

(२) (i) (१) १५ अगस्त (२) २६ जनवरी

(ii) (१) अमर सपूतों के अथक प्रयासों से १५ अगस्त १९४७ को हमारा देश स्वतंत्र हुआ इसलिए।

(२) आजादी मिलने के बाद लगन से देश का संविधान बनाया गया तथा २६ जनवरी १९५० को इसे देश में लागू किया इसलिए।

(३) (i) (१) गुलामी (२) रात

(ii) (१) उजाला (२) कोशिश

(४) **मेरा प्रिय त्योहार**

भारत में बहुत त्योहार मनाए जाते हैं। मेरा प्रिय त्योहार दिवाली है। यह त्योहार धनतेरस से शुरू होता है। दिवाली के दूसरे दिन लक्ष्मी पूजन होता है। चौथे दिन भाईदूज होती है। दिवाली आने के पहले सब लोग अपने घरों की साफ-सफाई करते हैं और घरों को सजाते है। दिवाली दिए का त्योहार है। दिवाली में घर में चकली, चिवडा, लड्डू, सेव, मिठाईयाँ बनाई जाती है। घर के सामने कंदील लगाते है। घर के बाहर बहुत सारे रंगों के साथ सुंदर रंगोली बनाते है। दिवाली में पटाखे जलाएँ जाते हैं। बाजार दुल्हन की तरह सजते हैं। घर में सब के लिए नए कपड़े खरीदे जाते है। दिवाली में हर जगह उत्साह भरा वातावरण रहता है। दिवाली में दिप जलाएँ जाते है। हर घर में दिपों की जगमगाहट से रोशनी नजर आती है। एक दूसरे को दिवाली की शुभकामनाएँ देने के लिए पड़ोसी, रिश्तेदार आते हैं। बडे, छोटे सभी इस त्योहार में भाग लेते हैं। दिपावली का त्योहार बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। अंधकार पर प्रकाश की विजय का यह त्योहार समाज में भाईचारे और प्रेम का संदेश देता है।

प्र.२. (अ) (१) राष्ट्रीय (२) गणतंत्र (३) राष्ट्रध्वज

(४) तिरंगे (५) सावधान (६) आनंदपूर्वक

(आ) (१)-(ई) (२)-(इ) (३)-(अ) (४)-(आ)

प्र.३. जीवन का एक-एक पल कीमती होता है। खोया हुआ धन हम फिर-से पा सकते हैं लेकिन बिता हुआ समय कभी लौटकर नहीं आता। दुनिया में ऐसी घड़ी बनी ही नहीं जो बीते हुए समय को फिर-से दिखा दें। अत: समय के सामने घुटने टेक देने चाहिए और उसका सदुपयोग करना चाहिए। समय पर पढ़ाई-लिखाई करनेवाला छात्र सफलता प्राप्त करता है। रोगी को समय पर इलाज मिले तो वह जल्दी स्वस्थ हो जाता है। समय पर बीज बोने पर किसान को अच्छी फसल मिलती है।

इन सब बातों से स्पष्ट है कि समय बड़ा महत्त्वपूर्ण है। संत कबीर के शब्दों में,

'कल करे सो आज कर, आज करे सो अब।
पल में परलै होएगी, बहुरी करेगा कब।।'

14. (अ) हम अलग - रूप एक

प्र.१. (अ) (१) - (आ) (२) - (उ) (३) - (अ)
(४) - (इ) (५) - (ई)

(आ) संख्या, चिंता, मंत्री, आशंका, पंसारी, जंगल, विहंग, सरपंच, अचंभा, बंधन, पंख, कंठ, सीमेंट, हिंदी, सुंदर आदि।

---

14. (ब) छुक-छुक गाड़ी

(अ) (१) सोमवार (२) मंगलवार (३) बुधवार
(४) गुरुवार या बृहस्पतिवार (५) शुक्रवार
(६) शनिवार (७) रविवार या इतवार

(आ) (१) चैत्र (२) वैशाख (३) ज्येष्ठ (४) आषाढ़
(५) श्रावण (६) भाद्रपद (७) आश्विन (८) कार्तिक
(९) अग्रहायन/अगहन (१०) पौष (११) माघ (१२) फाल्गुन

(इ) (१) वसंत, (२) ग्रीष्म, (३) वर्षा,
(४) शरद, (५) हेमंत, (६) शिशिर

(ई)

१	६	११	१६	२१
२	७	१२	१७	२२
३	८	१३	१८	२३
४	९	१४	१९	२४
५	१०	१५	२०	२५

(उ)

१ – एक	६ – छह	११ – ग्यारह	१६ – सोलह	२१ – इक्कीस
२ – दो	७ – सात	१२ – बारह	१७ – सत्रह	२२ – बाईस
३ – तीन	८ – आठ	१३ – तेरह	१८ – अठारह	२३ – तेईस
४ – चार	९ – नौ	१४ – चौदह	१९ – उन्नीस	२४ – चौबीस
५ – पाँच	१० – दस	१५ – पंद्रह	२० – बीस	२५ – पच्चीस

15. ज्ञानी

प्र.१. (१)

‘अ’	‘ब’
(१) बेटी	खत
(२) स्वेटर	ऊन
(३) समुद्र	बंदर
(४) विद्‌यालय	शिक्षा

(२) (i) (१) मना करने के बाद भी बच्चे बरसात में भीग रहे थे।
(२) स्वेटर भीगा हुआ था।
(ii) (१) सत्य (२) सत्य

(३) (i) (१) बंदरिया (२) बच्चियाँ
(ii) (१) बाहर (२) बुरा

(४) गर्मी से परेशान सब बारिश का इंतजार करते है और बारिश जब आती है तो सबके चेहरे पर एक मुसकान आ जाती हैं। बरसात में भीगने का हर किसी का मन होता है क्योंकि बरसात में भीगने का मजा कुछ और ही है। बच्चे पानी में उछलते-कूदते हैं। बारिश में आकाश की तरफ देखकर गोल-गोल घूमकर, हाथ के उपर बारिश की बूँदें लेने में बहुत अच्छा लगता है। कागद की नाव बनाकर पानी के रेले में बहाना और उसके पीछे भागने का खेल खूब आनंद देता है।

प्र.२. (१) मातृभाषा, (२) मनोरंजक, (३) ऊन,
(४) खत।

प्र.३. (अ) (१) आमने-सामने (२) साथ-साथ (३) हँसते-खेलते
(४) एक-दूसरे (५) सुख-दुख (६) अलग-अलग।

(आ)

समोच्चारित शब्द	हिंदी अर्थ	मराठी अर्थ
शिक्षा	पढ़ाई–लिखाई	दंड
बंदर	वानर / बंदर	बंदरगाह
ऊन	ऊन	धूप
खत	पत्र	खाद

(इ) (१) सुख–दुख (२) मातृभाषा (३) स्थिति

(४) समुद्र (५) ज्ञान (६) परिवार

(ई) (१) "अच्छा, जरा बैठो।"

(२) "अरे बंडूभाऊ, मैं क्यों शिक्षा दूँ ?"

(३) "दोनों परिवार एक–दूसरे के सुख–दुख में सहभागी होते हैं।"

(४) वर्ष ने कहा, "सभी एक, दो, तीन बोलो।"

(५) उसने कहा, "चलो, छुक–छुक गाड़ी खेलते हैं।"

16. बचाव

प्र.१. प्राकृतिक विपदाएँ यानी कि 'कुदरत की मार' जो हमारी जान–माल का नुकसान करती है । इनके नाम नीचे लिखे हैं – (१) बाढ़, (२) भूकंप, (३) त्सुनामी, (४) तूफान, (५) ज्वालामुखी, (६) जंगलों में लगने वाली आग, (७) अंतरिक्ष से गिरनेवाले उल्कापींड, (८) जमीन धँसना, (९) बादल फटना आदि ।

प्र.२ के, की, में, पर, को इन विभिक्त चिह्नों का प्रयोग पाठ में हुआ है ।

प्र.३. प्राकृतिक आपदाएँ आती हैं तब मनुष्य बेबस और लाचार हो जाता है । हर वर्ष भूकंप, बाढ़, आदि आपदाओं की मार मनुष्य सह रहा है । जब भूकंप आता है तो उसकी बनी बनाई बस्तियाँ उजड़ जाती हैं । कुछ ही मिनटों में नगर नष्ट–भ्रष्ट हो जाता है । इमारतें खंडहर में तबदील हो जाती है । पुल गिर जाते हैं । सड़कें धँस जाती हैं । जमीन में गड्ढ़े, दरारें पड़ जाती हैं । उन दरारों में से पानी, रेत ऊपर उछलता है । बाढ़ की स्थिति बन जाती है । कई लोग जान से हाथ धो बैठते हैं । क्षणभर में सबकुछ इतना भयंकर हो जाता है कि पहले जैसा फिर से बनाने में सालों लग जाते हैं ।

17. निरीक्षण

प्र.१. (अ)

(१) एक पौधा हवा से कार्बन–डाई–ऑक्साइड और पानी लेकर अपना भरण–पोषण करता है । लेकिन धूप में रखने पर वह अपना भोजन स्वयं बनाकर स्वस्थ रहता है । धूप में रखे पौधे के साथ यही हुआ । इसलिए वह हरा–भरा है ।

(२) कमरे में रखे पौधे को हवा और पानी तो उपलब्ध था लेकिन धूप उपलब्ध नहीं हो सकी । धूप न होने की वजह से वह अपना भोजन नहीं बना सका। उसके पत्तों का हरापन इसलिए नष्ट होता गया और पत्ते पीले पड़ गए । अन्न के अभाव में पौधा मुरझा गया ।

(आ) सूर्योदय और सूर्यास्त दोनों का अद्भुत नजारा देखने के लिए सैलानी दूर–दूर तक चले जाते हैं जैसे कि समुंदर किनारे, पहाड़ों पर वगैरह । सूर्योदय पूर्व दिशा में होता है और सूर्यास्त पश्चिम दिशा में होता है । दोनों भी समय सूर्य लाल रंग का दिखता है और आकार भी बड़ा होता है । सूर्योदय दिन की शुरुआत और रात की समाप्ति है । रातभर के आराम से थकान मिटाकर दुनिया काम में लग जाती है। उत्साह और जोश का प्रतीक है सूर्योदय । पंछी चहचहाते हुए चारा चुगने निकल पड़ते हैं । सूर्यास्त दिन की समाप्ति और रात की शुरुआत है । दिन भर की थकान मिटाकर आराम करने का समय है । पंछी चहचहाते हुए अपने घरौंदे में वापस आ जाते हैं । सूर्योदय और सूर्यास्त दोनों ही समय प्रार्थना करनी चाहिए । सूर्योदय की प्रार्थना आशीर्वाद माँगने के लिए हो और सूर्यास्त की प्रार्थना ईश्वर को धन्यवाद देने के लिए हो ।

18. चलो - चलें

प्र.१.

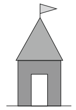	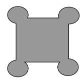	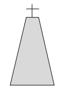	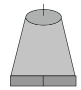	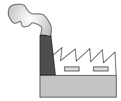
मंदिर	किला	गिरजाघर	बुद्धविहार	कारखाना

				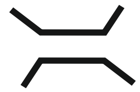
शांतिक्षेत्र	पास में विद्यालय हैं।	हवाईजहाज	पगडंडी	पुल

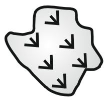	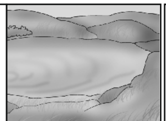	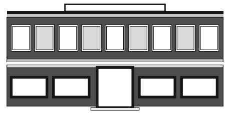	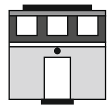
दलदल	जलाशय	समता विद्यालय	पशु अस्पताल

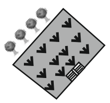	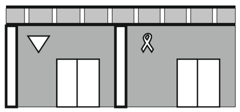		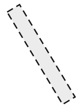
बगीचा	अस्पताल	पक्की सड़क	कच्ची सड़क

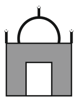	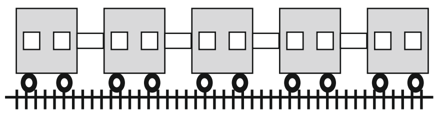
मस्जिद	इकहरी रेलवे

19. स्वयं अध्ययन

प्र.१.

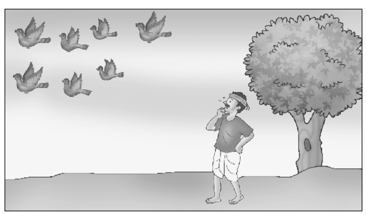

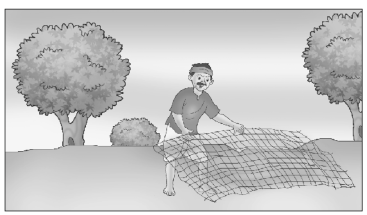

एक बहेलिया था । एक दिन वह पेड़ के नीचे खड़ा था । पंछियों को पकड़ने

की बात सोच ही रहा था कि तभीं उसे आसमान में ढेर सारे कबूतर उड़ते हुए नजर आए । उसे लगा आज तो खुदा भी उसपर बड़ा मेहरबान है । मन में विचार आया नहीं कि सामने उनके दर्शन । बड़ी चतुराई से उसने वहाँ जाल बिछा दिया । कबूतरों को ललचाने के लिए उस जाल में कुछ दाने बिखेर दिए और खुद दूर जाकर एक पेड़ के पीछे छिप गया ।

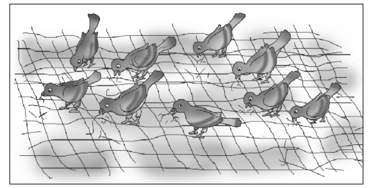

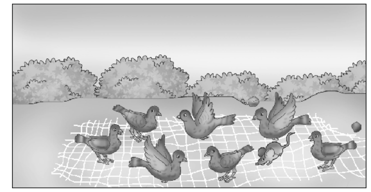

दाने देखकर कबूतर दाना चुगने नीचे उतरे और सारे कबूतर जाल में फँस गए । अब वे बड़ा शोर मचाने लगे । एक-दूसरे पर दोषारोप करने लगे । लेकिन उससे क्या लाभ ? अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत !

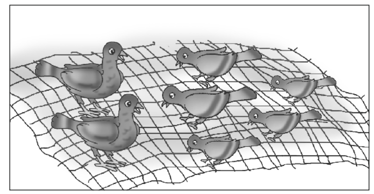

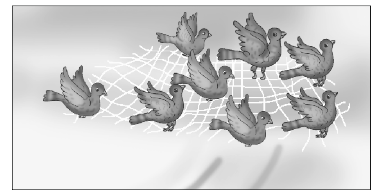

उन कबूतरों में एक बुजुर्ग कबूतर था । उसने उन सब को चुप कराया । फिर समझाया कि हम सब एक साथ उड़ेंगे तो इस जाल को भी उड़ाकर ले जा सकते हैं। मैं जब इशारा करूँगा तब एक साथ पूरी शक्ति से उड़ना ।

सभी कबूतरों को बुजुर्ग कबूतर की बात समझ में आई । उन्होंने बुजुर्ग कबूतर की बात मानी । जब बुजुर्ग कबूतर ने इशारा किया तब सारे कबूतर एक साथ उड़े ।

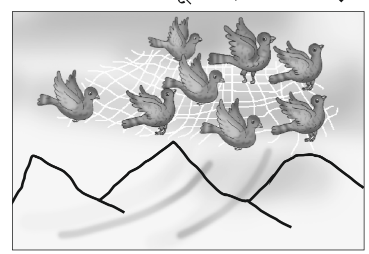

कबूतरों को इस तरह जाल के साथ उड़ते देख बहेलिया हक्का - बक्का रह गया । वह उन कबूतरों के पीछे दौड़ा लेकिन उन्हें पकड़ने में असफल रहा ।

स्वयं सोचो ।

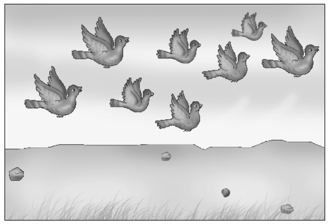

सारे कबूतर दूर पहाडों की खाई में जाल समेत उतर गए । वहाँ उनका मित्र चूहा रहता था । चूहे ने अपने मित्रों की मदद की। उनका जाल अपने पैने दाँतों से कुतर डाला । सारे कबूतर जाल से मुक्त हुए । उन्होंने अपने चूहे मित्र को धन्यवाद दिया। अब वे फिर से खुले आसमान में आजादी से उड़ने लगे ।

सीख – इस कहानी से यही सीख मिलती है कि एकता में बड़ी ताकत होती है और लालच में कभी नहीं आना चाहिए ।

पुनरावर्तन – 3

प्र.१ खुले आसमान में उड़ने वाला पंछी हम सबको आकर्षित करता है। लेकिन कुछ लोग बडे निष्ठुर होते हैं जो उनको निशाना बनाते हैं। कुछ बच्चे गुलेल से निशाने बाजी का खेल खेलते हैं तो कुछ बच्चों की पतंगबाजी पंछियों को घायल कर देती हैं। उन सबके प्रति मन में क्रोध आता है। रास्तें में तड़पते पंछी के प्रति करुणा उमड़ आती है। उसका इलाज करने के लिए मन हमें प्रेरित करता है। पंछियों के डॉक्टर के पास उसे ले चलने को दिल कहता है। मन विद्रोह कर उठता है उन लोगों के खिलाफ जिन्होंने पंछी को इस तरह तड़पने पर मजबूर किया । मासूम पंछी बोल नहीं पाता तो क्या हुआ दर्द तो उसका हमसे कम नहीं। उसके दर्द को महसूस कर आँखें भर आती हैं।

प्र.२. (क) मैं और में अक्षर में फर्क हैं।
''मैं'' सर्वनाम है और ''में'' अधिकरण कारक का विभक्ति चिह्न है। दोनों का व्याकरण और अर्थ भिन्न हैं।

(ख) ''कहाँ'' और लिखने में सिर्फ चाँद बिंदी का फर्क है लेकिन अर्थ में बड़ा अंतर है। जब ''कहा'' पर चाँद बिंदी लिखी गई है तो अर्थ होगा जगह के बारे में पूछा गया सवाल और''कहा'' ''कहाँ'' क्रियाविशेषण अव्यय है तो चाँद बिंदी न हो तो ''कहा'' का मतलब है कहना। कहना क्रिया का भूतकाल का रूप कहा शब्द क्रिया है। मतलब एक अविकारी शब्द है तो दूसरा विकारी शब्द है।

(ग) ''ओर'' शब्द और ''और'' शब्द लिखने में एक मात्रा का फर्क है और व्याकरण में ''ओर'' संबंध सूचक अव्यय है तो ''और'' समुच्चयबोधक अव्यय है। ''ओर'' शब्द से संज्ञा सर्वनाम का अन्य शब्दों से संबंध स्थापित किया जाता है तो ''और'' शब्द दो शब्द या दो वाक्यों को जोड़ता है। दोनों अविकारी शब्द हैं।

(घ) ''है'' और ''हैं'' में केवल बिंदी का फर्क है। दोनों क्रियाएँ हैं। बिंदी देने पर ''है'' क्रिया का वचन बदल जाता है। एकवचन में ''है'' और बहुवचन में ''हैं'' लिखा जाता है।

(ड) वाक्य में क 'को' छोटी इ और बडी ई की मात्रा देने पर क्या फर्क पड़ता है समझाया गया है। छोटी इ की मात्रा देने पर वह समुच्चय बोधक अव्यय बनता है और दो वाक्यों को जोड़ने के लिए काम आता है। बड़ी ई की मात्रा लगाने पर 'की' कारक विभक्ति बन जाता है और संबंध स्थापित करने का काम करता है।

प्र.३.

ख आँ	–	आँख	र पै	–	पैर
ज ग का	–	कागज	ट ना घु	–	घुटना
ई र पा चा	–	चारपाई	व ली दी पा	–	दीपावली
न का	–	कान	ठ हों	–	होंठ
र द बं	–	बंदर	त र भा	–	भारत
ला शा ठ पा	–	पाठशाला	वा ल री फु	–	फुलवारी

कृती / उपक्रम

(१) विद्यालय के पहले दिन मैं स्कूल जाने के लिए जितना उत्सुक था उतनी ही मेरी माँ चिंतित थी । वे मेरी आँखों में आँसू नहीं देख सकती इसलिए चिंतित थी। जब माँ ने मेरा हाथ छोड़ा और शिक्षिका के सुपुर्द किया तब तक मेरा सारा जोश ढीला पड़ गया था। मेरी भी आँखें भर आई थीं। लेकिन मुझे मेरी शिक्षिका माता जैसी ही लगी। उन्होंने मेरा परिचय अन्य छात्रों से करवाया। फिर हमने कुछ गीत गाए, खेले, साथ में टिफीन खाया और पहले ही दिन मैं उन बच्चों के साथ घुल-मिल गया। मुझे मेरी पाठशाला मेरा दूसरा घर ही लगी।

(२) हमारी पाठशाला में राष्ट्रीय पर्व, वार्षिक खेल समारोह, छात्रों का बिदाई समारोह आदि मनाए जाते हैं। मुझे स्वतंत्रता दिवस का समारोह बहुत अच्छा लगता है। आठ दिन पहले से हम छात्र तैयारी में लग जाते हैं। हम पाठशाला को चित्र और तख्तियों से सजाते हैं। रंगीन कागज की पताका से सजावट करते हैं। सुबह साढ़े सात बजे सभी छात्रों की उपस्थिती में प्रमुख अतिथि द्वारा ध्वजवंदन होता है।

राष्ट्रगीत गाया जाता है। राष्ट्रभक्ति के गीत, नृत्य और नाटक मंचित किए जाते हैं। भाषण दिए जाते हैं और हम सब को लड्डू भी मिलता है।

(३) चित्र में गाँव का दृश्य दिखाई दे रहा है। गाँव बहुत साफ दिखाई दे रहा है। चित्र में तीन घर नजर आ रहे है। घर के पास गोठ है जहाँ गाय को बाँधकर रखा है। चार पेड़ दिख रहे है। गाँव में कुआँ है। एक आदमी और एक औरत खेती के औजार लेकर खेत में जा रहे है। एक लड़का और एक लड़की गेंद से खेल रहे है।

पुनरावर्तन - 4

प्र.१. (अ)

(१) मैं जा रहा हूँ।	(२) मैं जा रही हूँ।
(३) हम जा रहे हैं।	(४) हम जा रही हैं।
(५) तू जा रहा है।	(६) तू जा रही है।
(७) तुम जा रहे हो।	(८) तुम जा रही हो।
(६) आप जा रहे हैं।	(१०) आप जा रही हैं।
(ये सभी वाक्य पुल्लिंग हैं)	(ये सभी वाक्य स्त्रीलिंग हैं।)

(आ)

(१) यह जा रहा है	(२) यह जा रही है।
(३) ये जा रहे हैं।	(४) ये जा रही हैं।
(५) वह जा रहा है।	(६) वह जा रही है।
(७) वे जा रहे हैं।	(८) वे जा रही हैं।
(ये सभी वाक्य पुल्लिंग है)	(ये सभी वाक्य स्त्रीलिंग है)

प्र.२. सुयोग मेरा बहुत अच्छा मित्र है। उसके पिता नहीं है। माँ काम पर जाती है और जैसे तैसे माँ-बेटे का गुजारा होता है। सुयोग माँ का दर्द जानता है। वह चाहता है कि जल्दी से पढ़-लिखकर बड़ा हो जाऊँ और माँ की मदद करूँ। गरीबी में भी वह नैतिकता नहीं भूला है। वह मेहनती है, स्वाभिमानी है, कभी किसीसे कुछ माँगता नहीं है। आज उसके पास कॉपी खरीदने के लिए पैसे नहीं है। मैं उसकी मदद करना चाहता हूँ। गाँव में मेला लगा है। मेरे दूसरे मित्र मेला देखने जा रहे हैं। मुझे भी माँ ने तीस रुपये दिए और दोस्तों के साथ जाने की अनुमति दी। हाथ में पैसे आते ही मुझे सुयोग याद आया। अब मेरा मन डाँवडोल होने लगा। एकतरफ मेले के झूले और गन्ने का ज्यूस आकर्षित कर रहा था तो दूसरी तरफ सुयोग की

कॉपी। मन की खींचातानी में मैं बाजार पहुँचा। मैंने सुयोग के लिए कॉपी खरीदी और उसे मित्रता का वास्ता देकर लेने पर मजबूर किया। इस तरह आज मित्रता की जीत हुई । मुझे मन में एक अद्‌भुत शांति और आनंद का एहसास हुआ।

प्र.३. यातायात की सुविधा के लिए हर चौराहे पर सिग्नल और जेब्रा क्रॉसिंग है। सिग्नल की तीन बत्तियाँ वाहनों के लिए होती हैं। लाल बत्ती जलने पर वाहनों को रुक जाना है, पीली बत्ती जलने पर तैयार हो जाना है और हरी बत्ती जलने पर चलना है। पादचारियों के लिए भी इसी तरह तीन बत्तियाँ जलती है। लाल बत्ती जल रही हो तो कभी सड़क पार नहीं करनी चाहिए। पीली बत्ती जली हो तो सावधानी बरतनी चाहिए। सड़क पार होने जितना समय न हो तो रुकना ही बेहतर होता है और हरी बत्ती में तो चलता हुआ आदमी का चित्र ही दिखता है इसका मतलब उस समय आराम से सड़क पार करनी चाहिए।

प्र.४. बड़ों से बातचीत करोगे। क्योंकि बड़ों का अनुभव और तजुर्बा हमारे मन से परीक्षा का डर दूर करने मे सहायक होगा। खेलने से थोड़ी देर के लिए परीक्षा का डर भागेगा लेकिन फिर आ जाएगा। गाना गाने से या सुनने से मनोरंजन होगा पर डर भगाने में बहुत थोड़ी मदद होगी। आराम करने से भी बहुत ज्यादा मदद नहीं मिलेगी। ख, ग और घ के अंतर्गत दिए गए उपाय से डर भगाने में मिलने वाली मदद अल्प है और 'क' के अंतर्गत सूझाया गया उपाय पूरी तरह मददगार है।

कृती / उपक्रम

(१) (१) भारत प्राकृतिक रूप से चौहद्दी में बसा हुआ देश हैं। इसके तीनों ओर समुद्र और एक ओर पर्वत की सीमा है। पूर्व में बंगाल की खाड़ी पश्चिम में अरब सागर और दक्षिण में हिंद महासागर है और उत्तर मे पर्वतराज हिमालय इसकी रक्षा करता है।

(२) विविधता मे एकता भारत की है विशेषता।

भारत में कई धर्म और जाति के लोग मिलजुलकर रहते हैं। उनका रहन-सहन, भाषा, पोशाक, खानपान, रीति -रिवाज अलग अलग है। फिर भी उनमें एकता है, भाईचारा है।

(३) इसका साहित्य समृद्ध है।

भारत में वेद, उपनिषद जैसे प्राचीन ग्रंथ हैं। इन ग्रंथों में ज्ञान का अक्षय

भंडार है। इन ग्रंथों का अध्ययन करने के लिए हमें कई जन्म लेने पड़ेंगे। आज जो विज्ञान और चिकित्सा में आविष्कार हो रहे हैं उनकी कड़िया इन ग्रंथों में मिलती हैं।

(४) यह देश जगदीश का दुलारा है।

इस देश में ईश्वर ने बार–बार जन्म लिया है। कभी राम बनकर तो कभी कृष्ण बनकर। कई महान पुरुषों ने इस धरती पर कृपा की है। महात्मा गांधी ने विश्व को अहिंसा और असहकार का शस्त्र दिया और बिना खून – खराबे के युद्ध जीता जा सकता है समझाया। रामानुज जैसे गणितज्ञ, आर्यभट्ट जैसे वैज्ञानिक, चाणक्य जैसे कुटनीतिज्ञ ऐसा अनगिनत हस्तियाँ हैं जिन्होंने देश का नाम दुनिया में रोशन किया।

(५) पर्यटन के लिए आकर्षण का केंद्र है।

दुनिया भर के लोग भारत में पर्यटन के लिए आते हैं। कश्मीर की खूबसूरती को देखकर यात्री कहते हैं कि यह धरती का स्वर्ग है। ताजमहल दुनिया के सात अजूबों में से एक है। जयपुर एक गुलाबी शहर, प्राचीन किले, मंदिर, गुफाएँ आदि यात्रियों को लुभाते हैं।

देश की विशेषताएँ लिखने के लिए सागर की स्याहीं बना दे, मेरु पर्वत की कलम और धरती–आकाश को कागज बना दे तो भी कम ही पड़ेगे।

'ऐसा मेरा देश है भाई, इस देश का यारो क्या कहना !'

(२)

(१) आम	(२) नीम	(३) नारियल
(४) पीपल	(५) अशोक	(६) चीकू
(७) कटहल	(८) गुलमोहर	(९) चंपा
(१०) महुआ	(११) मौलश्री	(१२) पपिता
(१३) पलाश	(१४) बरगद	(१५) इमली
(१६) बादाम	(१७) जामून	(१८) तुलसी
(१९) रबर	(२०) सहिजन	(२१) हरसिंगार
(२२) अमरूद	(२३) बेर	(२४) शरीफा
(२५) ख्रिस्मस ट्री	(२६) मेफ्लावर	(२७) सुपारी
(२८) अनार	(२९) खजुर	(३०) सेब
(३१) संतरा	(३२) केला	(३३) मोसंबी
(३४) रात की रानी		

(३) मुझे मैदानी और घर में बैठकर खेले जानेवाले कई खेल पसंद हैं। उनमें से कुछ मैं अक्सर खेलता हूँ।

(१) फुटबॉल : मैं हररोज सुबह फुटबॉल खेलने मैदान में जाता हूँ। इसकी वजह से मेरी कसरत हो जाती है। पूरा दिन मैं चुस्त–दुरुस्त रहता हूँ। मेरे पैर ही नहीं पूरा शरीर ताकतवर बनता है। जब हमारी टीम जीत जाती है तो बड़ा गर्व महसूस होता है। लेकिन हार जाने पर भी उसे स्वीकार करने की हिम्मत मुझमें विकसित हो रही है। इसके कारण मेरा मन भी मजबूत हो रहा है।

(२) शतरंज : घर में बैठकर शतरंज खेलना भी मुझे बेहद पसंद है। शतरंज बुद्धि का खेल है। अपने प्रतिद्वंद्वी को परास्त करने के लिए अलग–अलग पैंतरे अपनाने पड़ते हैं। इसकी वजह से मेरी तर्क शक्ति विकसित हो रही है। चारों तरफ से घिर जाने पर भी कैसे बचा जा सकता है यह सोच मुझमें आने लगी है। जीवन की समस्याएँ भी ऐसी हो होती हैं। उन्हें तर्कशक्ति और बुद्धि के बलबुते पर ही सुलझाना पड़ता है। शांतिपूर्वक सोचने से हर समस्या का हल ढूँढ़ा जा सकता है यह बात मुझे शतरंज सिखाता है।